

विविध-

सिर्फ स्क्रीन देखने से नहीं होती..

विचार-

विश्वास और गौरव से भरा आत्मनिर्भर...

खेल-

रणजी ट्रॉफी: दुष्कर्म के आरोपी...

देश में अराजकता का माहौल बना रही है कांग्रेस, संशोधित फॉर्म 6 पर सुप्रीम कोर्ट की दो टूक, हारने पर हर बार दोषी होती है ईवीएम : मुख्यमंत्री योगी

चुनाव आयोग के दावे पर साफ किया रुख

लखनऊ, संवाददाता । मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कांग्रेस पर तीखा हमला करते हुए कहा कि पिछले कई दिनों से देश की राजधानी दिल्ली में लगातार देखा जा रहा है कि कांग्रेस व इंडिया गठबंधन न केवल आम जन को परेशान, बल्कि अव्यवस्था व अराजकता पैदा कर देश की संवैधानिक संस्थाओं को भी कठघरे में खड़ा करने का कुत्सित प्रयास कर रहे हैं। पहचान का संकट खड़ा करने और भ्रष्ट मंसूबों के कारण कांग्रेस और उसके सहयोगी दल अपनी साख पूरी तरह खो चुके हैं और उनके इस गैर-राजनीतिक व्यवहार को देश की जनता भली-भांति देख रही है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधियों से बातचीत में सीएम योगी ने कहा, आश्चर्य है कि चुनाव जीतने पर इनका पुरुषार्थ



और हारने पर ईवीएम और इलेक्शन कमीशन दोषी हो जाता है। न्यायालय अगर मेरिट के आधार पर कोई फैसला देता है, तो माननीय न्यायालय को भी कठघरे में खड़ा करने का कुत्सित प्रयास किया जाता है। तमाम प्रकार की धमकियां देने का प्रयास होता है। ऐसे ही तमाम अन्य संवैधानिक

संस्थाओं को कठघरे में खड़ा करना, गाली-गलौच करना और अव्यवस्था फैलाना कांग्रेस की नियति का हिस्सा बन चुका है। मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस नेतृत्व को यह समझना चाहिए कि जनता उन्हें हर बार क्यों ठुकरा रही है। 1985 के बाद से यूपी में कांग्रेस फिर नहीं आ पाई।

यूपी की जनता ने कांग्रेस को 41 वर्ष पहले ही विदा कर दिया था। देश के अन्य राज्यों में भी लोगों का कांग्रेस से मोहभंग हो चुका है और वे इससे मुक्ति पा चुके हैं। कांग्रेस के लोगों को चाहिए कि वे अपने अकर्मण्य, भ्रष्टाचारी और जनता का विश्वास खो चुके नेतृत्व को बदलें। भारत में अराजकता न

फैलाने और भारत की संवैधानिक संस्थाओं को कठघरे में खड़ा करने का कुत्सित प्रयास न करें। सीएम योगी ने कहा कि भारत की जनता लोकतांत्रिक दृष्टि से बड़ी जागरूक है। वह इस अराजकता को स्वीकार नहीं करेगी। ऐसा नहीं है कि जनता बहुत दिनों और बहुत देर तक यह सब बर्दाश्त करेगी। अगर कांग्रेस व उनके सहयोगी दलों ने अपने असंवैधानिक और अलोकतांत्रिक कृत्य बंद नहीं किए तो उन्हें बचा-खुवा जनधार भी गंवाना पड़ेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस देश में अराजकता फैलाने से बाज आए। जनता-जनार्दन और युवाओं को गुमराह करने से बाज आए। मेरिट के आधार पर और मुद्दों पर चर्चा कर के स्वस्थ लोकतांत्रिक व्यवस्था का हिस्सा बनें। यह देश के लोकतंत्र और जनता के हित में भी होगा।

नई दिल्ली, एजेंसी । सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को स्पष्ट किया कि उसने नए मतदाताओं के पंजीकरण के लिए चुनाव आयोग के संशोधित फॉर्म 6 पर न तो कोई फैसला दिया है और न ही उसे मंजूरी दी है। अदालत ने कहा कि बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) से जुड़े मामले में फैसला सुनाते समय संशोधित फॉर्म उसके सामने था ही नहीं। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची तथा न्यायमूर्ति वी. मोहना की पीठ ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के कामकाज और फॉर्म 6 में किए गए बदलावों को लेकर दायर नई याचिका पर सुनवाई के दौरान यह स्पष्टीकरण दिया। संशोधित फॉर्म में नए मतदाता के रूप में



पंजीकरण कराने वाले आवेदकों को यह बताना होता है कि वे या उनके माता-पिता पिछले एसआईआर में शामिल थे या नहीं। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता के वकील ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने पांच अक्तूबर को स्पष्ट किया था कि संशोधित फॉर्म 6 को अदालत ने मंजूरी नहीं दी है। वहीं, चुनाव आयोग का दावा था कि संशोधित घोषणा-पत्र को शीर्ष अदालत की स्वीकृति मिली हुई है। इस

पर न्यायमूर्ति बागची ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने नए फॉर्म 6 पर कोई फैसला नहीं दिया है। बिहार एसआईआर मामले में फैसला सुनाए जाने के समय संशोधित फॉर्म अस्तित्व में ही नहीं था। उन्होंने स्पष्ट किया, जए फॉर्म 6 पर कोई न्यायिक फैसला नहीं हुआ है। अदालत ने कहा कि उसकी पिछली मौखिक टिप्पणियों को संशोधित घोषणा-पत्र की मंजूरी या अस्वीकृति के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

श्रीनगर में पाकिस्तानी आतंकियों को पनाह देने के लिए इस्तेमाल प्रश्नपटी जब्त

श्रीनगर, एजेंसी । नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (एनआईए) ने केस संख्या आरसी-02 / 2026 / एनआईए / जेएमयू के तहत श्रीनगर के हजरतबल इलाके के दनिहामा गांव में खसरा नंबर 315 पर मौजूद एक रिहायशी प्रॉपर्टी को जब्त किया है। यह प्रॉपर्टी आरोपी गुलाम मोहम्मद मीर उर्फ श्मामा गसर् की है। यह मामला प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन शलशकर-ए-तैयबाश (एलईटी), जो पाकिस्तान का एक आतंकी संगठन है, उससे जुड़ी सीमा-पार आतंकवादी साजिश से संबंधित है। एनआईए के डीजी से जरूरी मंजूरी लेने के बाद, यूए (पी) एक्ट, 1967 की धारा 25 के तहत यह प्रॉपर्टी जब्त की गई है। जांच में इस प्रॉपर्टी और आतंकवादी साजिश के बीच सीधा संबंध पाया गया है, क्योंकि इस जगह का इस्तेमाल कथित तौर पर पाकिस्तानी आतंकवादियों को पनाह देने और आतंकी नेटवर्क से जुड़े आपत्तिजनक सामान को छिपाने के लिए किया गया था।

मणिपुर में फिर भड़की हिंसा

इंफाल, एजेंसी । मणिपुर में एक बार फिर हिंसा से तनाव बढ़ गया है। कांगपोकपी जिले में कथित उग्रवादी हमले में मारे गए 52 वर्षीय अजिनबोउ आर का सिर अब तक नहीं मिला है। इससे नाराज नागा नागरिक संगठन जॉइंट ट्राइब्स काउंसिल मणिपुर ने सिर को 48 घंटे के भीतर परिवार को सौंपने का अल्टीमेटम दिया है। संगठन ने साफ कहा है कि सिर मिलने तक शव का पोस्टमार्टम नहीं होने दिया जाएगा। साथ ही, राज्य और केंद्र सरकार को ताजा हिंसा के लिए जिम्मेदार ठहराते हुए मांग पूरी नहीं होने पर कड़े कदम उठाने की चेतावनी दी है। अजिनबोउ आर की शनिवार को कांगपोकपी जिले के मकुई अशांग गांव पर हुए कथित हमले में हत्या कर दी गई थी। रविवार रात उनका बिना सिर वाला शव पोस्टमार्टम के लिए इम्फाल स्थित जवाहरलाल नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज लाया गया।

‘नियम नहीं तोड़ा, फिर भी मुझ पर टूट पड़े पुलिसकर्मी’ : माकपा सांसद

नई दिल्ली, एजेंसी । दिल्ली में 11 अक्तूबर को मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान कथित मारपीट का मामला सामने आया है। माकपा के राज्यसभा सांसद जॉन ब्रिटान ने सोमवार को दिल्ली पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों पर गंभीर आरोप लगाए। उनका कहना है कि वह पुलिस की ओर से तय प्रतिबंधों का पालन करते हुए मीडिया से बात कर रहे थे, फिर भी सुरक्षाकर्मियों ने उन्हें पकड़ लिया और उनके साथ कथित तौर पर मारपीट की। ब्रिटान को रविवार को कर्नोट प्लेस इलाके में पत्रकारों से बातचीत के दौरान हिरासत में लिया गया था। इसके बाद उन्हें एक्स-रे और चिकित्सकीय जांच के लिए राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले जाया गया। ब्रिटान ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा कि वह बैरिकेडिंग से काफी दूर थे और उन्होंने किसी पुलिस अधिकारी से बातचीत भी नहीं की थी। उनके मुताबिक, वह अकेले थे और निषेधाज्ञा के तहत तय संख्या की सीमा के भीतर थे। इसके बावजूद पुलिस और सीआरपीएफ के जवानों ने उन्हें क्यों पकड़ा, यह उनकी समझ से बाहर है। सांसद ने दावा किया कि सुरक्षाकर्मियों ने उन्हें करीब 50 मीटर तक घसीटा, पुलिस वाहन के अंदर उनके साथ मारपीट की और बाद में सड़क किनारे छोड़ दिया। उन्होंने कहा कि घटनास्थल पर मौजूद मीडिया के वीडियो में पूरी घटना देखी जा सकती है। माकपा महासचिव एमए बेबी ने भी इस घटना की निंदा की। उन्होंने आरोप लगाया कि ब्रिटान प्रदर्शन में शामिल नहीं हुए थे, फिर भी उनके साथ ऐसा व्यवहार किया गया। बेबी के अनुसार, घटना के बाद ब्रिटान को अस्पताल ले जाया गया। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि माकपा सांसद एए रहीम और वी शिवदासन के साथ भी मारपीट की गई।

वोट चोरी के खिलाफ जन आंदोलन जारी रहेगा : राहुल गांधी

नयी दिल्ली, एजेंसी । कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने वोट चोरी और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ जनआंदोलन जारी रखने का ऐलान करते हुए कहा है कि जब तक मुख्य चुनाव आयुक्त इस्तीफा नहीं देते तथा चुनाव व्यवस्था में सुधार नहीं होता तब तक युवा पीछे नहीं हटेंगे और यह जन आंदोलन चलता रहेगा। श्री गांधी ने सोमवार को यहां विशेष संवाददाता सम्मेलन में यह घोषणा करते हुए कहा कि दिल्ली को किले में तब्दील कर दिया गया है और लोगों को राजधानी पहुंचने से रोका जा रहा है, आंदोलनकारी को पीटा जा रहा है और इसे साफ है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार ज्ञानेश कुमार को बचा रही है। उन्होंने दावा किया कि पुलिसकर्मी भी मौजूदा हालात से परेशान हैं और उनमें से कई विपक्ष के आंदोलन को सही मानते हैं। उनका कहना था कि सच्चाई उनके साथ है और वे न थकेंगे, न रुकेंगे और लड़ते रहेंगे।



उन्होंने कहा कि पुलिस, आईटीबीपी, सीआरपीएफ, जनता और विपक्षी दल एक तरफ हैं, जबकि दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और ज्ञानेश कुमार हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि आरएसएस और भाजपा से जुड़े लोग महिलाओं और युवाओं के खिलाफ हिंसा कर प्रदर्शनकारियों को निशाना बना रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि मोदी सरकार के करीब 200 अधिकारी उनके संपर्क में हैं और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) तथा विदेश मंत्रालय के भीतर से उन्हें सूचनाएँ लगातार मिल

रही हैं। उन्होंने कहा कि मतदाताओं के अधिकार छीने जाने पर लोग सवाल पूछ रहे हैं। श्री गांधी ने बताया कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और उन्होंने लोकतंत्र तथा चुनाव की निष्पक्षता पर गंभीर चिंता जताते हुए भारत के मुख्य न्यायाधीश को पत्र लिखा था। मुख्य न्यायाधीश ने जवाब देते हुए याचिका दायर करने को कहा है। इंडिया गठबंधन के नेता अब मिलकर उच्चतम न्यायालय जाकर याचिका दायर करेंगे। लोगों से जन आंदोलन में जुटने की अपील करते हुए उन्होंने कहा कि संविधान की रक्षा में विश्वास रखने वाले सभी दलों के लोग

इस लड़ाई में शामिल होंगे। जब तक संविधान की रक्षा, मुख्य चुनाव आयुक्त का इस्तीफा, चुनाव व्यवस्था में सुधार और देश के लोगों को न्याय नहीं मिलता आंदोलन जारी रहेगा। कांग्रेस नेता ने कहा कि पहले दिन विपक्षी नेताओं को चुनाव आयोग जाते समय रोका गया और बस में बैठाया गया, दूसरे दिन जंतर-मंतर जाते समय भी उन्हें रोका गया और एकवा-मुक्की हुई, जबकि तीसरे दिन विपक्षी नेताओं ने राजघाट पर प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि अब विपक्ष उच्चतम न्यायालय जा रहा है। उन्होंने युवाओं से हर दिन लोकतंत्र और संविधान की रक्षा की लड़ाई जारी रखने, किसी से डरे बिना आंदोलन से पीछे नहीं हटने का आह्वान किया और कहा कि यह आंदोलन भगवान शिव का तांडव और शिव की बारात की तरह लोक कल्याण के लिए है इसमें कुछ भी पहले से तय नहीं होता और इसमें कोई भी शामिल हो सकता है।

सीजेआई सूर्यकांत ने खरगे-राहुल को लिखा पत्र, कहा- दायर करें याचिका

लंबित मामलों के बीच मुलाकात संभव नहीं

नई दिल्ली, एजेंसी । सीजेआई सूर्यकांत ने 11 अक्तूबर को राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को



पत्र लिखा। इसमें उन्होंने लिखा कि लंबित मामलों पर चर्चा के लिए बैठक बुलाना शक्तियों के बंटवारे के सिद्धांत का पूरी तरह से उल्लंघन होगा। सीजेआई सूर्यकांत ने रविवार को अपने पत्र में लिखा कि यह यह सिद्धांत भारत के संविधान के मूल ढांचे का एक अहम हिस्सा है। स्थापित नैतिक मूल्यों व न्यायिक मर्यादा के भी

खिलाफ होगा। सीजेआई ने आगे लिखा, श्इसी संदर्भ में, मैं आपको यह भी याद दिलाना चाहता हूं कि हमारे संवैधानिक ढांचे के तहत, आपके पत्र में उठाए गए मुद्दों से निपटने के लिए भारत के सुप्रीम कोर्ट को कोई प्रशासनिक अधिकार नहीं दिए गए हैं। उन्होंने आगे लिखा, हालांकि, संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत अपने अधिकार क्षेत्र

का इस्तेमाल करते हुए, और न्यायिक समीक्षा समेत अन्य शक्तियों के साथ, हम भारत के नागरिकों पर असर डालने वाले अहम मुद्दों पर न्यायिक पक्ष से विचार करने के लिए बाध्य हैं। सीजेआई ने आगे लिखा, श्भारत का सुप्रीम कोर्ट भारत के हर नागरिक के मौलिक अधिकारों को बनाए रखने और उनकी रक्षा करने के अपने संकल्प को दोहराता है। नागरिकों को कानून में बताई गई प्रक्रिया के जरिए किसी भी समय इन अधिकारों को लागू करवाने की मांग करने का हक है। इसलिए, प्रशासनिक स्तर पर कोई ज्ञापन सौंपने के बजाय, भारत के सुप्रीम कोर्ट की न्यायिक शक्तियों का इस्तेमाल करना आपके लिए ज्यादा सही रहेगा।

रियल एस्टेट में निवेश के विवाद पर दर्ज मुकदमे की कार्यवाही पर रोक

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने रियल एस्टेट कारोबार में निवेश की रकम को लेकर दर्ज मुकदमे में आरोपियों को राहत देते हुए आपराधिक कार्यवाही पर रोक लगा दी है। कोर्ट ने मामले में विपक्षी शिकायतकर्ता को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। साथ ही राज्य सरकार और शिकायतकर्ता को दो सप्ताह में जवाबी हलफनामा दाखिल करने का आदेश दिया है।

यह आदेश न्यायमूर्ति संजय कुमार पचौरी की एकल पीठ ने फैंज खान और दो अन्य की याचिका पर दिया है। अलीगढ़ के क्वार्सी थाने में याचियों के खिलाफ धोखाधड़ी सहित विभिन्न आरोप में एफआईआर दर्ज है। ट्रायल कोर्ट नौ अप्रैल 2०26 के संज्ञान व समन आदेश जारी किया था। याचियों ने मुकदमे की कार्यवाही को रद्द करने की मांग में याचिका दायर की है।

अधिवक्ता ने दलील दी कि शिकायतकर्ता ने याचियों के रियल एस्टेट कारोबार में लाभ कमाने के उद्देश्य से रकम निवेश की थी। विवाद मूलरूप से निवेश की रकम की वसूली से जुड़ा दीवानी विवाद है। रकम की वसूली के लिए दीवानी मुकदमा दाखिल करने के बजाय आपराधिक मामला दर्ज कराया गया। कोर्ट ने प्रथम दृष्टया मामले को विचारणीय मानते हुए विपक्षी शिकायतकर्ता को नोटिस जारी किया। अगले आदेश तक संबंधित आपराधिक मुकदमे की आगे की कार्यवाही पर रोक रहेगी।

दबंगई औन रोड...दो बाइकों से टकराई कार, रोकने पर पुलिस पर चढ़ाने का प्रयास

प्रयागराज। खुल्दाबाद में मर्करी चौराहे पर रविवार शाम कार सवार युवकों की दबंगई से आधे घंटे तक अफरातफरी मची रही। तेज रफ्तार कार ने पहले दो बाइकों में टक्कर मारी। पीड़ितों ने पीछा किया तो दबंगों ने दोबारा गाड़ी से टक्कर मार दी। हद तो तब हो गई जब मौके पर पहुंची पुलिस ने रुकने के लिए कहा तो युवकों ने उन पर ही गाड़ी चढ़ाने की कोशिश की। इससे सिपाही पुष्पेंद्र का पैर पहिये के नीचे दबने से वह घायल हो गए। घटना रविवार रात करीब 7रू15 बजे की है। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक कार में चार युवक सवार थे, जिनकी उम्र 22 से 25 वर्ष के बीच थी। नूरुल्ला रोड की ओर से खुल्दाबाद की तरफ जा रही कार पहले दो बाइक सवारों से टकराई गई। सूचना पर खुल्दाबाद थाना प्रभारी केशव वर्मा मौके पर पहुंचे। इस दौरान कार सवार युवकों और पुलिस के बीच तीखी बहस हुई। इसके बाद पुलिस ने कार को कब्जे में ले लिया और करेली निवासी चारों युवकों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

5०० मीटर तक कार दौड़ाते रहे युवक खुल्दाबाद में कार सवार युवक करीब 5०० मीटर तक गाड़ी दौड़ाते रहे। आरोप है कि रोकने की कोशिश करने पर भी चालक ने कार नहीं रोकी। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों का फुटेज खंगाल रही है। खुल्दाबाद थाना प्रभारी केशव वर्मा ने बताया कि वाहन को सीज कर मामले की जांच की जा रही है।

फाफामऊ तिराहे पर टेंपो स्टैंड से लग रहा जाम, राहगीर परेशान

प्रयागराज। तिराहे पर टेंपो स्टैंड के कारण भीषण जाम लग रहा है। इससे राहगीरों और दुकानदारों को भारी दिक्कतें झेलनी



पड़ रही हैं। ई-रिक्शा और विक्रम वाहन यहां सवारी उतारते-बैठाते हैं। फाफामऊ तिराहे से प्रतापगढ़, सहसों और कचहरी के लिए ई-रिक्शा और विक्रम खड़े होकर सवारी बैठाते हैं। कुंभ के दौरान इस तिराहे का सुंदरीकरण किया गया था। सुंदरीकरण के कारण तिराहे पर जगह कम हो गई है। कम जगह होने से बड़े वाहनों को मुड़ने में काफी दिक्कत आती है। ई-रिक्शा और विक्रम के खड़े होने तथा सवारी उतारने-बैठाने से यहां अक्सर जाम लग जाता है। इस जाम से राहगीरों को आवागमन में परेशानी होती है। जाम लगने से दुकानदारों की बिक्री पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। स्थानीय व्यापारियों ने स्टैंड हटवाने के लिए कई जगह शिकायत की। हालांकि, उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली। दुकानदार आशीष कुमार, जस करन यादव, प्रदीप केसरवानी और फूलचंद केसरवानी ने बताया। उनके अनुसार, ग्राहक जाम के कारण रुकना नहीं चाहते हैं। थाना प्रभारी छोटक यादव ने स्टैंड हटवाने का प्रयास करने का आश्वासन दिया है।

फाफामऊ रामलीला कमेटी ने निकाला भव्य कर्ण घोड़ा जुलूस

प्रयागराज। स्थानीय रामलीला कमेटी ने रामलीला मंचन से पहले कर्ण घोड़ा जुलूस निकाला। रामलीला रंगमंच पर आरती और पूजन के बाद जुलूस शुरू हुआ। इसमें आधा दर्जन चौकियां, सड़क बत्ती, डीजे, ऊट और घोड़े शामिल थे। इसे



देखने रास्ते में बड़ी संख्या में लोग खड़े थे। जुलूस पुरानी गली, इलाहाबाद रोड और बनारस रोड से नेहा चौराहे पहुंचा। वहां से चौकियां जुलूस के पीछे चलने लगीं। यह प्रतापगढ़ रोड से पुराने फाफामऊ के रामलीला मैदान गया। पताका के बाद जुलूस रामलीला रंगमंच पर समाप्त हुआ। इसके बाद मुकुट पूजा की गई। सोमवार से यहां रामलीला का मंचन होगा। जुलूस के साथ उच्च कमान संत बक्श सिंह और संरक्षक प्रेम बहादुर सिंह थे। उत्तर प्रदेश कोआपरेटिव बैंक के निदेशक उपेंद्र सिंह भी मौजूद थे। कमेटी के अध्यक्ष धीरेंद्र केसरवानी, महामंत्री सुरेश केसरवानी और अन्य सदस्य भी शामिल थे।

आंदोलन कर रहे छात्रों को पुलिस ने किया गिरफ्तार, तीखी नोकझोंक

प्रयागराज। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे प्रतियोगी छात्रों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। छात्रों को जबरन घसीटकर पुलिस ने गाड़ी में भर दिया।

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे प्रतियोगी छात्रों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। छात्रों को जबरन घसीटकर पुलिस ने गाड़ी में भर दिया। इसको लेकर छात्रों और पुलिस के बीच तीखी नोकझोंक हुई। बैंक रोड पर हजारों की संख्या में छात्र नारेबाजी कर रहे थे। इसकी जानकारी होने पर बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स ने छात्रों को यहां पर आंदोलन करने से रोका। इसके बाद छात्रों की पुलिस से बहस हो गई। सिविल ड्रेस में पहुंचे पुलिसकर्मियों ने छात्रों का हाथ और पैर पकड़कर उनको घसीटते हुए पुलिस के

दो गाय, एक भैंस, जर्मन शेफर्ड और 35 हजार, दरोगा ने रिश्वत में मांगा ये सब, अब एफआईआर

प्रयागराज। रिश्वत मांगने के आरोप में एसटीएफ प्रयागराज में तैनात दरोगा पर हिसार में एफआईआर की गई है। शराब तस्करी के मामले में दरोगा पर



दो गाय, एक भैंस, जर्मन शेफर्ड कुत्ता और 35 हजार मांगने का आरोप लगा है प्रयागराज के नवाबगंज थाने में दो सितंबर 2023 को मनवीर नाम के शख्स पर अवैध शराब तस्करी की एफआईआर दर्ज की गई थी। प्रयागराज थाने में दर्ज शराब तस्करी के मामले से नाम हटाने के बदले एसटीएफ में तैनात दरोगा रणेंद्र कुमार सिंह पर दो

600 मीटर और लंबा होगा प्रयागराज एयरपोर्ट का रनवे, भारी विमानों की टेकऑफ़-लैंडिंग होगी आसान

प्रयागराज। वायुसेना ने प्रयागराज एयरपोर्ट को अधिक सक्षम बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। एयरपोर्ट के मौजूदा 27०० मीटर लंबे रनवे को 600 मीटर बढ़ाया जा रहा है।

वायुसेना ने प्रयागराज एयरपोर्ट को अधिक सक्षम बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। एयरपोर्ट के मौजूदा 27०० मीटर लंबे रनवे को 600 मीटर बढ़ाया जा रहा है। इस विस्तार का मुख्य उद्देश्य आगामी महाकुंभ 2031 के दौरान बढ़ने वाले हवाई यातायात को सुचारु रूप से संभालना है। यह विस्तार बड़े विमानों की लैंडिंग और टेकऑफ़ को आसान

बनाएगा। इससे बोइंग और अन्य भारी-भरकम विमानों के संचालन में आने वाली बाधाएं हटेंगी। एयरपोर्ट के मौजूदा 2700 मीटर लंबे रनवे को 600 मीटर बढ़ाया जा रहा है। इस विस्तार का मुख्य उद्देश्य आगामी महाकुंभ 2031 के दौरान बढ़ने वाले हवाई यातायात को सुचारु रूप से संभालना है। यह विस्तार बड़े विमानों की लैंडिंग और टेकऑफ़ को आसान

बनाएगा। इससे बोइंग और अन्य भारी-भरकम विमानों के संचालन में आने वाली बाधाएं हटेंगी। एयरपोर्ट के मौजूदा 2700 मीटर लंबे रनवे को 600 मीटर बढ़ाया जा रहा है। इस विस्तार का मुख्य उद्देश्य आगामी महाकुंभ 2031 के दौरान बढ़ने वाले हवाई यातायात को सुचारु रूप से संभालना है। यह विस्तार बड़े विमानों की लैंडिंग और टेकऑफ़ को आसान

आंदोलन कर रहे छात्रों को पुलिस ने किया गिरफ्तार, तीखी नोकझोंक



वाहन में भरकर हिरासत में ले लिया। ज्ञानेश कुमार का पुतला फूँका सीटू और उत्तर प्रदेश किसान सभा ने शनिवार को वोट चोरी के विरोध में जुलूस निकाला। प्रदर्शनकारियों ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार का पुतला फूँका और उनके इस्तीफे की मांग की। उत्तर प्रदेश में नवंबर 2025 में एसआईआर प्रक्रिया जल्द

चुनाव आयोग पर मिलीभगत का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) से करोड़ों मतदाताओं को मताधिकार पर संकट है। लोकतंत्र और राजनीतिक अधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलन जारी रहेगा। मौके पर अविनाश मिश्रा, विकास स्वरूप, भूपेंद्र पांडेय, यशवंत सिंह, ईशू मोर्य, रमाकांत, चंद्रमा और मोहनलाल आदि रहे।

संयुक्त किसान मोर्चा के अध्यक्ष रमेश प्रसाद ने कहा कि सरकार को किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलन जारी रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार को किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलन जारी रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार को किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलन जारी रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार को किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलन जारी रखना चाहिए।

संयुक्त किसान मोर्चा के अध्यक्ष रमेश प्रसाद ने कहा कि सरकार को किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलन जारी रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार को किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलन जारी रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार को किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलन जारी रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार को किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलन जारी रखना चाहिए।

600 मीटर और लंबा होगा प्रयागराज एयरपोर्ट का रनवे, भारी विमानों की टेकऑफ़-लैंडिंग होगी आसान

प्रयागराज। वायुसेना ने प्रयागराज एयरपोर्ट को अधिक सक्षम बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। एयरपोर्ट के मौजूदा 27०० मीटर लंबे रनवे को 600 मीटर बढ़ाया जा रहा है।



वायुसेना ने प्रयागराज एयरपोर्ट को अधिक सक्षम बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। एयरपोर्ट के मौजूदा 27०० मीटर लंबे रनवे को 600 मीटर बढ़ाया जा रहा है। इस विस्तार का मुख्य उद्देश्य आगामी महाकुंभ 2031 के दौरान बढ़ने वाले हवाई यातायात को सुचारु रूप से संभालना है। यह विस्तार बड़े विमानों की लैंडिंग और टेकऑफ़ को आसान

बनाएगा। इससे बोइंग और अन्य भारी-भरकम विमानों के संचालन में आने वाली बाधाएं हटेंगी। एयरपोर्ट के मौजूदा 2700 मीटर लंबे रनवे को 600 मीटर बढ़ाया जा रहा है। इस विस्तार का मुख्य उद्देश्य आगामी महाकुंभ 2031 के दौरान बढ़ने वाले हवाई यातायात को सुचारु रूप से संभालना है। यह विस्तार बड़े विमानों की लैंडिंग और टेकऑफ़ को आसान

बनाएगा। इससे बोइंग और अन्य भारी-भरकम विमानों के संचालन में आने वाली बाधाएं हटेंगी। एयरपोर्ट के मौजूदा 2700 मीटर लंबे रनवे को 600 मीटर बढ़ाया जा रहा है। इस विस्तार का मुख्य उद्देश्य आगामी महाकुंभ 2031 के दौरान बढ़ने वाले हवाई यातायात को सुचारु रूप से संभालना है। यह विस्तार बड़े विमानों की लैंडिंग और टेकऑफ़ को आसान

बनाएगा। इससे बोइंग और अन्य भारी-भरकम विमानों के संचालन में आने वाली बाधाएं हटेंगी। एयरपोर्ट के मौजूदा 2700 मीटर लंबे रनवे को 600 मीटर बढ़ाया जा रहा है। इस विस्तार का मुख्य उद्देश्य आगामी महाकुंभ 2031 के दौरान बढ़ने वाले हवाई यातायात को सुचारु रूप से संभालना है। यह विस्तार बड़े विमानों की लैंडिंग और टेकऑफ़ को आसान

लोकनाट्य रामलीला के लोक दर्शन को जीवन्त रखना जरूरी: अशोक

प्रयागराज। मानव जीवन मूल्यों को अनुप्राणित करती,धर्म प्रवण समाज के बीच रचे बसे लोकनाट्य रामलीला का लोक स्वरूप भारतीय लोक संस्कृति और परंपरा के अनुरूप अपने आदर्श प्रतिमानों के साथ सदियों से विद्यमान है।कुछ दशक पूर्व क्वार मास के आरंभ होते ही लगभग प्रत्येक गांव में होने वाले लोकनाट्य रामलीला का मंचन अब उतना नहीं दिखाई देता। कुछ दशक पूर्व गांवों में रामलीला के आरंभ होते ही सबसे पहले स्थान, मंच वेशभूषा, मुकुट मुखौटा आदि का पूजन किया जाता प्रायः 1० दिन तक मंचन और उसके बाद गांव–गांव दशहरा मेले का आयोजन किया जाता। प्रथम दिन नारद मोह से आरंभ होने वाली रामलीला के दौरान मुनि आगमन, ताड़का वध, बारी फुलवारी,अहित्या उद्धार,राम बनवास, सीता हरण,लंका दहन,लक्ष्मण शक्ति, मेघनाथ वध,अहिरावण वध आदि के उपरांत दशहरा मेले में रामा दल और रावण दल के बीच संग्राम के उपरांत गोधूलि बेला में रावण का विशाल पुतला दहन करने की परंपरा रही। नवरात्र के महीनों पूर्व लोग अपने-अपने गांव की रामलीला को लेकर पात्रों में चर्चा आरंभ होती और कमेटी के द्वारा योग्य पात्रों का चयन कर,रिहर्सल भी आरंभ हो जाता। कलाकारों द्वारा चरित्र अभिनय के दौरान गायन शैली की प्रमुखता के साथ प्रस्तुति को और भी प्रभावी बनाने के लिए वसुनायक, किंकर, राधेश्याम, बद्री कृ त रामायण से छन्दों–चौपाइयों को संग्रहित कर संवादों के बीच उनका समागम और फिर प्रस्तुति से विशेष रोचकता लाने की भी परंपरा चलती रही। आकाशवाणी, दूरदर्शन के कार्यक्रमों के संचालक, गीतों के बदलते लोकरंग पर शोध कर रहे करछना क्षेत्र की महेवा गांव निवासी चर्चित हास्य कवि अशोक बेशरम ने बताया कि कभी अपने–अपने गांव की रामलीला की साज सज्जा और उत्कृष्ट अभिनय को लेकर एक होड़ सी लगी रहती। मंच पर अलंकृत जंगल दृश्य, राम दरबार, राजमहल के आकर्षक पर्दों काअद्भुत दृश्य दर्शकों के मन को आकृष्ट करता। मंचन के दौरान सर्वप्रथम कलाकारों द्वारा प्रार्थना के बाद भगवान की आरती और फिर नृत्य कलाकारों द्वारा नृत्य की प्रस्तुति के बाद दृश्यपाठ आरंभ होता। गांव में रामलीला मंचन को लेकर बाहर नौकरी करने वाले कई पात्र भी छुट्टी लेकर घर आ जाते और अपनी भूमिका के उपरांत ही वापस जाते थे। रामलीला को देखने के लिए पास– पड़ोस के गांवों से भी बड़ी संख्या में लोग जुड़ते वहीं गांव के भी बड़े, बूढ़े, युवा और महिलाएं रामलीला स्थल पर पहुंच कर देर रात्रि तक मंचन का लुप्त उठाती। अच्छे अभिनय हेतु लोग पात्रों को पुरस्कृत और सम्मान करते। कई पात्रअपनी भूमिका और अभिनय को लेकर उसी नाम से गांव में पुकारे भी जाने लगते। मंच व्यास भी प्रायः अपने गांव के ही रहते। ‘सियाराम मय सब जग जानी’ जैसा एक अद्भुत, आध्यात्मिक, आस्थापूर्ण और मनोरंजक परिदृश्य स्थापित हो जाता था।

इसी रामलीला ने हमारे बीच अपने जीवन मूल्यों और आदर्शों के प्रतिदर्श स्थापित कर जहां एक और मानवता, नीति, धर्म सामाजिक समरसता,सर्वहित भावना सदाचार की जागृति की तो वहीं पिता, पुत्र भाई, सगे संबंधी, राजा–प्रजा, गुरु–शिष्य परिजन–पुरजन के प्रति आदर, भाव मान, मर्यादा प्रेम, निष्ठा कर्तव्य जैसे मानक भी स्थापित किये। भगवान राम के आदर्श लोक जीवन को आचारित करने की संकल्पित भावना का विस्तार किया। लौकिक जगत में जनमानस के बीच दैवी और आसुरी प्रवृत्तियों अन्तरतरु पहुंच कर असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक दशहरा पर्व भी,हमारी सनातन संस्कृति का संवाहक बनकर अपने आदर्श लोकरंग के साथ जीवंत रहा। आज के बदलते दौर में लगभग एक दो दशक से नवीनतम और आकर्षक बनाने के लिए लाइट साउंड,सीडी हाईटैक सिस्टम के नये तौर तरीके भी विकसित हुए, जहां इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के मंच पर रामलीला का एक अलग रूप रंग देखा जा रहा है।किंतु कभी तीन–चार दशक पहले गांव–गांव,मंच पर्दे वाली रामलीला का वह परिदृश्य तब जैसा नहीं दिखाई देता। कहीं ना कहीं आपसी द्वेष,वैमनस्य,आपाधापी, उदासीनता या फिर नई पीढ़ी के लोगों में इसके प्रति समय और सोच का अभाव सा दिख रहा है। जिससे अपने पुरखों के जमाने से चली आ रही उस परंपरा और विरासत से दूरी बढ़ती जा रही है। हालांकि अभी भी कई गांवों में कुछ युवाओं ने लगातार मंचन रामलीला को जीवंत रखा है,किन्तु इन तीन चार दशकों में कई महत्हूर जगहों पर मंचन बन्द भी हो चुका है। हमें चाहिए कि अपने लोकनाट्य रामलीला की उस परंपरा,अपने पुरखों की विरासत और इसके लोक दर्शन को संजोए रखें।

इसी रामलीला ने हमारे बीच अपने जीवन मूल्यों और आदर्शों के प्रतिदर्श स्थापित कर जहां एक और मानवता, नीति, धर्म सामाजिक समरसता,सर्वहित भावना सदाचार की जागृति की तो वहीं पिता, पुत्र भाई, सगे संबंधी, राजा–प्रजा, गुरु–शिष्य परिजन–पुरजन के प्रति आदर, भाव मान, मर्यादा प्रेम, निष्ठा कर्तव्य जैसे मानक भी स्थापित किये। भगवान राम के आदर्श लोक जीवन को आचारित करने की संकल्पित भावना का विस्तार किया। लौकिक जगत में जनमानस के बीच दैवी और आसुरी प्रवृत्तियों अन्तरतरु पहुंच कर असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक दशहरा पर्व भी,हमारी सनातन संस्कृति का संवाहक बनकर अपने आदर्श लोकरंग के साथ जीवंत रहा। आज के बदलते दौर में लगभग एक दो दशक से नवीनतम और आकर्षक बनाने के लिए लाइट साउंड,सीडी हाईटैक सिस्टम के नये तौर तरीके भी विकसित हुए, जहां इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के मंच पर रामलीला का एक अलग रूप रंग देखा जा रहा है।किंतु कभी तीन–चार दशक पहले गांव–गांव,मंच पर्दे वाली रामलीला का वह परिदृश्य तब जैसा नहीं दिखाई देता। कहीं ना कहीं आपसी द्वेष,वैमनस्य,आपाधापी, उदासीनता या फिर नई पीढ़ी के लोगों में इसके प्रति समय और सोच का अभाव सा दिख रहा है। जिससे अपने पुरखों के जमाने से चली आ रही उस परंपरा और विरासत से दूरी बढ़ती जा रही है। हालांकि अभी भी कई गांवों में कुछ युवाओं ने लगातार मंचन रामलीला को जीवंत रखा है,किन्तु इन तीन चार दशकों में कई महत्हूर जगहों पर मंचन बन्द भी हो चुका है। हमें चाहिए कि अपने लोकनाट्य रामलीला की उस परंपरा,अपने पुरखों की विरासत और इसके लोक दर्शन को संजोए रखें।

गौ सेवा से समाज और राष्ट्र को मिलती है नई दिशा: सर्वजीत सिंह

प्रयागराज। विसहिजन कला में रविवार को गौ सेवा, गो–संरक्षण और गो आधारित उत्पादों के प्रचार–प्रसार पर एक बैठक हुई। इसमें गौ सेवा से जुड़े पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने गाय के संरक्षण व संवर्धन पर विचार विमर्श किया। कार्यक्रम के आयोजक अभिषेक तिवारी ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। पूर्वी उप्र क्षेत्र के सह गौ सेवा संयोजक सर्वजीत सिंह ने कहा कि गौ सेवा समाज और राष्ट्र को नई दिशा देती है। उन्होंने बताया कि गाय का संरक्षण भारतीय संस्कृति की परंपरा का हिस्सा है। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है। बैठक में समाज में गौ सेवा के प्रति जागरूकता बढ़ाने पर भी जोर दिया गया। विहिप के जिलाध्यक्ष नित्यानन्द उपाध्याय, भाजपा नेता जयशंकर पांडेय और शीतला तिवारी सहित कई लोग उपस्थित रहे।

चारपाई पर सो रहा था परिवार, बगल से गुजर गया तेंदुआ

प्रयागराज। हंडिया तहसील क्षेत्र के टेला गांव की ठकुरान बस्ती में तेंदुए की मौजूदगी से ग्रामीणों में दहशत बनी हुई है। शुक्रवार रात एक ग्रामीण के घर में लगे सीसीटीवी कैमरे में तेंदुआ कैद होने का दावा किया गया। इसके अगले दिन भी तेंदुआ दिखाई देने की बात ग्रामीणों ने कही। इसके बावजूद अब तक तेंदुआ पकड़ में नहीं आ सका है। टेला गांव निवासी बाबा सिंह के घर में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज में रात के समय तेंदुआ दिखाई दे रहा है। फुटेज सामने आने के बाद बस्ती के लोगों में भय बढ़ गया। ग्रामीणों को बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों की सुरक्षा की चिंता सता रही है। सूचना पर वन विभाग की टीम गांव पहुंची और मौके पर जांच–पड़ताल की। ग्रामीणों का आरोप है कि टीम कुछ देर बाद वापस लौट गई, लेकिन तेंदुए को पकड़ने के लिए कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई।



सम्पादकीय.....

राहुल गांधी का धरना

नेता विपक्ष और विपक्षी दलों का कार्य सत्ता पक्ष की कमजोरियों को उजागर करना और सरकार की नीतियों को लेकर जन साधारण के सम्मुख अपना दृष्टिकोण रखना ही है। वर्तमान में मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार विपक्षी दलों के निशाने पर हैं। राहुल गांधी समेत विपक्षी नेता ज्ञानेश कुमार पर वोट चोरी का आरोप लगाकर सड़कों पर उतर आये। इंडिया गठबंधन के सांसदों ने जब निर्वाचन आयोग के मुख्यालय की ओर रोष मार्च शुरू किया तो दिल्ली पुलिस ने उन्हें आकाशवाणी भवन के सामने रोक लिया। राहुली गांधी और प्रियंका आकाशवाणी भवन के एक वृक्ष के नीचे धरने पर बैठ गए। इस दौरान राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार पर ‘वोट चोरी’ के जरिए देश को हाईजैक करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि यह देशद्रोह है और ऐसा करने वाले बच नहीं पाएंगे। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि करीब 300 सांसद मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार और दोनों निर्वाचन आयुक्तों से मिलने के लिए पहुंचे थे, लेकिन उन्हें मिलने का अवसर नहीं दिया गया। उन्होंने कहा कि अगर निर्वाचन आयोग जन प्रतिनिधियों से नहीं मिलेगा तो फिर लोकतंत्र का क्या मतलब है? विपक्षी सांसदों के प्रदर्शन के बीच निर्वाचन आयोग ने कहा कि शाम चार बजे तक किसी भी राजनीतिक दल ने अपने अधिकृत प्रतिनिधियों के जरिये उसके साथ बैठक के लिए समय नहीं मांगा। आयोग ने कहा कि बाद में दिल्ली पुलिस ने उसे सूचित किया कि सांसदों का एक प्रतिनिधिमंडल निर्वाचन आयोग से मिलकर ज्ञापन सौंपना चाहता है। आयोग ने कहा कि उसने 2025 में राजनीतिक दलों के साथ बैठक के लिए एक प्रक्रिया तय की थी, जिसके तहत किसी भी राजनीतिक दल का प्रतिनिधिमंडल या कई दलों का संयुक्त प्रतिनिधिमंडल अपने विधिवत अधिकृत प्रतिनिधि के जरिये बैठक के लिए समय मांग सकता है। जिस राह पर नेता विपक्ष राहुल गांधी और उनके साथी नेता चल रहे हैं वह न उनके हित में है और न ही देश के हित में है। मतदाता सूचियों का सही होना देशहित में है। इसका विरोध के लिए विरोध करना उचित नहीं है। बिहार से शुरू हुई यह प्रक्रिया जैसे–जैसे आगे बढ़ रही है, वैसे–वैसे उसे गलत बताने का विपक्ष का अभियान तेज हो रहा है। वास्तव में इसी इरादे से कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने इसे वोट चोरी का नाम दे दिया है। यह तब है, जब सुप्रीम कोर्ट इस प्रक्रिया को आवश्यक मान रहा और उसे आगे बढ़ाने की अनुमति भी दे रहा है। यह सही है कि एसआईआर जैसी व्यापक प्रक्रिया में कुछ न कुछ त्रुटियां होंगी, चुनाव आयोग को भी यह चाहिए कि वह इसे यथासंभव त्रुटिरहित बनाए। इसी के साथ उसे ऐसे भी उपाय करने चाहिएं, जिससे यह प्रक्रिया सतत चलती रहे और लोगों के लिए सुविधाजनक भी हो, ताकि हर वैध मतदाता अपना नाम वोटर लिस्ट में शामिल करा सके। उचित यह होगा कि चुनाव आयोग एसआईआर के मामले में लोगों को आवेदन करने या अपना नाम वोटर लिस्ट में जुड़वाने के लिए समयसीमा में न बांधे। उसकी ओर से समयसीमा तय कर देने से यह संदेश निकलता है कि यदि किसी कारण किसी का नाम वोटर लिस्ट में शामिल होने से रह गया तो वह मताधिकार से वंचित हो जाएगा। राहुल गांधी का प्रधानमंत्री मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, संघ प्रमुख मोहन भागवत व मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश पर ‘वोट चोरी’ का आरोप लगाने का दूसरा पहलू यह है कि वह अपने नेतृत्व और कांग्रेस की आंतरिक कमजोरियों की अनदेखी कर रहे हैं। साथ में संघ और भाजपा की धरातल स्तर पर मजबूत पकड़ को भी समझ नहीं पा रहे। यह कहना कि भाजपा का चुनावी वर्चस्व मुख्यतः किसी धांधली का नतीजा है, राजनीतिक घटनाक्रम से जुड़े असुविधाजनक तथ्यों व सत्य को नजरअंदाज करना होगा। सबसे सीधा सवाल ही लीजिए: क्या भारत की चुनावी सर्वेक्षण एजेंसियां भी इस साजिश का हिस्सा हैं? 2014 के बाद से हुए एक के बाद एक चुनावों ने दिखाया है कि नरेंद्र मोदी की व्यक्तिगत लोकप्रियता अब भी काफी मजबूत है, खासकर हिंदी पट्टी और पश्चिमी भारत के बड़े हिस्सों में। भाजपा ने एक बेहद मजबूत राजनीतिक और संगठनात्मक मशीन खड़ी की है, जिसकी बराबरी करने में कांग्रेस संघर्ष करती रही है। भाजपा के पास विशाल केंडर नेटवर्क है, आरएसएस का तंत्र है, गहरे वित्तीय संसाधन हैं, आक्रामक संचार तंत्र है, स्पष्ट वैचारिक आधार है और राष्ट्रीय विमर्श को चुनावी अभियानों में बदलने का पर्याप्त अनुभव है। एक ताकतवर चुनावी मशीन के प्रभाव को समझने के लिए किसी साजिश के सिद्धांत की जरूरत नहीं है। समय की मांग यह है कि कांग्रेस व उनके सहयोगी दलों को धरने और रोष मार्च की राह छोड़कर अपनी आंतरिक कमजोरियों को लेकर आत्मचिंतन करना चाहिए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सार्वजनिक जीवन के 25 वर्ष उनकी उस वैचारिक यात्रा को देखने का अवसर है, जिसमें एक कुशल संगठनकर्ता के रूप में पहले गुजरात, फिर राष्ट्रीय स्तर पर संगठन में नई कार्यशैली के प्रयोग किए। उनकी नेतृत्व क्षमता का परिचय पिछले दिनों नई दिल्ली में संपन्न हुए ब्रिक्स समिट में भी देखने को मिला। पश्चिम एशिया में संघर्षरत शक्तियों को एक ही टेबल पर लाकर तथा भारत की चिंताओं और सांझे विकास की अवधारणा को शामिल करते हुए एक सांझा घोषणा पत्र जारी किया गया। यदि हम इतिहास के झरोखे में झांक कर देखें, तो स्वतंत्रता के बाद आपातकाल के विरुद्ध उपजा समग्र क्रांति आंदोलन, कश्मीर का ऐतिहासिक सत्याग्रह और राम जन्मभूमि आंदोलन, ये भारतीय इतिहास के राजनीतिक परिवर्तनों के साक्षी रहे हैं। परंतु, वर्ष 2014 का लोकसभा चुनाव वह ऐतिहासिक मोड़ था, जब देश की जनता ने सीधे तौर पर अपने प्रधानमंत्री को चुना। वर्ष 2014 से लेकर आज तक प्रधानमंत्री मोदी के प्रति जन–सामान्य का यह अटूट

विश्वास और निष्ठा अक्षुण्ण है। दुनिया के राजनीतिक विश्लेषकों के लिए निश्चित ही यह विस्मयकारी है कि भारत जैसी उदार लोकतांत्रिक व्यवस्था में कोई एक व्यक्ति इतने दीर्घ कालखंड तक जन–जन के विश्वास को कैसे सुरक्षित रख सकता है। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी जन–कल्याणकारी नीतियों से इस असंभव को संभव कर दिखाया है। जनधन योजना, उज्ज्वला, अंत्योदय आवास, आयुष्मान भारत, पी.एम. किसान सम्मान निधि, कौशल विकास, मुद्रा योजना और स्टार्टअप इंडिया जैसे युगांतरकारी अभियानों ने पुरानी सरकारों की पारंपरिक और औपचारिकता मात्र की कार्यशैली को पूरी तरह बदल दिया है। इन लोक–कल्याणकारी योजनाओं और परियोजनाओं से समाज के अंतिम छोर पर खड़े आम व्यक्ति के जीवन में वास्तविक और सकारात्मक बदलाव आया है। देश के बहुलंबित वैचारिक मुद्दों के सर्वमान्य समाधान के साथ–साथ, राष्ट्र की सुरक्षा, समृद्धि और स्वाभिमान के लिए गए साहसिक निर्णयों से

उनके भीतर के चट्टानी आत्मविश्वास को हम महसूस कर सकते हैं। प्राचीन गौरव के साथ–साथ प्रधानमंत्री मोदी आधुनिकता के साथ भी अपडेट रहते हैं। भारत ने यू.पी.आई. के माध्यम से दुनिया को कैशलैस लेनदेन में एक नई दिशा दी है। कई देश आज भारत के यू. पी.आई. सिस्टम को अपना रहे हैं। आज भारत में डिजिटल भुगतान सामान्य जीवन का हिस्सा हो गया है। उनके सार्वजनिक जीवन की शुरुआत संघ के प्रचारक के रूप में हो गई थी, जिस दौरान उन्होंने समाज और राष्ट्र को बारीकी से जाना और समझा तथा समाज के लिए संगठन की ताकत की आवश्यकता को समझा। भाजपा संगठन में काम करते हुए उन्होंने बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक संगठन को मजबूत करने पर जोर दिया। कोरोना काल में केन्द्र सरकार द्वारा देश के करोड़ों लोगों के स्वास्थ्य की सुरक्षा, वैक्सीनेशन से लेकर संगठन स्तर पर देश के सभी राज्यों में सेवा ही संगठन अभियान इसका बड़ा उदाहरण है।गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में उनके साथ हुए संवादों में

उनकी समयबद्धता और प्रत्येक विषय को पूरी एकाग्रता से सुनने की उनकी अनूठी शैली बहुत प्रभावित और उत्साहित करती थी। कालान्तर में राजनीति और जन–सामान्य के प्रति उनके इसी निरुस्वार्थ समर्पण के कारण ‘गुजरात मॉडल’ की गूंज वैश्विक पटल पर सुनाई दी। चाहे वह साबरमती रिवरफ्रंट का नव–निर्माण हो, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की भव्यता की बात हो, कच्छ की प्यासी धरती तक नर्मदा के जल को पहुंचाने का भागीरथी प्रयास हो या फिर भुज के विनाशकारी भूकम्प के पश्चात युद्धस्तर पर किए गए अथक राहत और पुनर्वास के कार्य, इन सभी ऐतिहासिक कार्यों ने जनमानस को उनकी अद्वितीय राजनीतिक और प्रशासनिक योग्यता को समझने का अवसर दिया। गुजरात में विकास के लिए निवेश को आकर्षित करने के उद्देश्य से 2003 में शुरू हुआ वाइब्रेंट गुजरात बाद में एक बड़े वैश्विक निवेश मंच के रूप में विकसित हुआ। दुनियाभर के कारोबारी और निवेशक गुजरात आए और राज्य को औद्योगिक निवेश के नक्शे पर नई पहचान मिली।

आज लगभग हर बड़ा राज्य इसी तरह के आयोजनों के माध्यम से निवेश आकष्यत कर रहा है। मोदी के कार्यकाल में प्रशासन को परिणाम देने वाली व्यवस्था के रूप में देखने की कोशिश शुरू हुई। मोदी जी का यही विजन केंद्र सरकार के कामकाज में भी दिखाई देता है।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व की एक और महत्वपूर्ण विशेषता विदेश नीति में दिखाई देती है। साल 2014 में प्रधानमंत्री पद संभालने के बाद पड़ोसी देशों के नेताओं को शपथ ग्रहण समारोह में आमंत्रित करने से लेकर ‘नेबरहुड फर्स्ट’ तक भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को विशेष महत्व दिया। इसके साथ ही एक्ट ईस्ट, खाड़ी देशों के साथ मजबूत रिश्ते, अमरीका और यूरोप के साथ रणनीतिक साझेदारी तथा रूस के साथ पुराने संबंधों को बनाए रखने की नीति ने भारत की विदेश नीति को एक नया व्यावहारिक स्वरूप दिया। आज भारत किसी एक खेमे की विदेश नीति की बजाय अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर अलग–अलग देशों के साथ संबंध बनाने की

स्थिति में है। इसका ताजा उदाहरण–ब्रिक्स के मंच से प्रधानमंत्री मोदी ने ग्लोबल साऊथ की आवाज को प्रमुखता से रखा। प्रधानमंत्री ने वैश्विक संस्थाओं में विकासशील देशों की अधिक भागीदारी और प्रतिनिधित्व की जरूरत पर जोर दिया। नरेंद्र मोदी को अनेक देशों ने अपने सर्वोच्च तथा महत्वपूर्ण नागरिक सम्मानों सम्मानित किया है। श्री मोद जी के नेतृत्व में राममंदिर निर्माण, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर और श्रीमहाकाल लोक कॉरिडोर के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक गौरव की पुनर्स्थापना का महत्वपूर्ण कार्य हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लोगों के ह्रदयों में स्वाधीनता की आग को जिंदा रखने वाले राष्ट्गीत वंदेमातरम् को संपूर्णता देने का ऐतिहासिक कार्य नरेंद्र मोदी ने किया है। इस यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि आज भारत अपने भविष्य को लेकर पहले से अधिक आत्मविश्वास के साथ बात करता है। दुनिया भी भारत को केवल एक बड़े बाजार के रूप में नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण वैश्विक शक्ति और समाधान देने वाले देश के रूप में देख रही है।

मोदी से बहुत कुछ सीख सकते हैं

अवधेश कुमार

इस समय भारतीय जनता पार्टी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राज्य और केन्द्र के लगातार 25 वर्ष सत्ता शीर्ष पर रहने के अवसर पर उनके जन्मदिवस 17 सितम्बर से 17 अक्तूबर तक देश भर में मुख्य 13 बड़े कार्यक्रम आयोजित कर रही है। इसका मूल स्वर है, सेवा संकल्प अभियान। अगर इन कार्यक्रमों पर आप सरसरी दृष्टि भी डालें तो साफ दिख जाएगा कि भाजपा समाज के हर वर्ग तक पहुंचने का लक्ष्य लेकर चल रही है। 17 अक्तूबर को समापन के अवसर पर पंचायत से लेकर संसद तक के जनप्रतिनिधियों का एक विशाल सम्मेलन आयोजित होगा, जिसे स्वयं प्रधानमंत्री मोदी संबोधित करेंगे। उन्होंने अपने जन्म स्थान बडनगर से वाराणसी और वाराणसी से बडनगर जाने वाली यात्रा में शामिल कार्यकर्ताओं को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से संबोधित किया, कहा कि राजनीति केवल चुनाव नहीं है। सभी कार्यकर्ताओं को सामाजिक कार्य और समाज सुधार में भी लगना चाहिए। यहीं पर नरेंद्र मोदी दूसरी पार्टियों के नेताओं से अलग दिखते हैं। यह अवसर विपक्ष सहित सबके लिए एक साथ कई बातों पर विचार करने का है। आज वह

प्रधानमंत्री हैं, इसलिए सामान्य लग सकता है लेकिन उनके सामने लगभग 1 दशक से ज्यादा ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न की गईं, जिनमें लगता था कि वे मुख्यमंत्री भी रह पाएंगे या नहीं। इसलिए समय इस बात के निष्पक्ष विश्लेषण का भी है कि सारी विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए मोदी ने 25 वर्षों तक मुख्यमंत्री से लेकर प्रधानमंत्री तक रहने का



चमत्कार कैसे किया? साथ ही यह भी कि उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद भारत में किस तरह के परिवर्तन आए? 2002 के गुजरात दंगों के बाद उनके विरुद्ध भारत से लेकर विश्व की मीडिया सहित न्यायालयों, मानवाधिकार संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और न जाने कहां–कहां हर स्तर पर अभियान चला। गुजरात दंगों की जांच के लिए गठित विशेष जांच दल ने उनसे 2 दिनों तक 9 घंटे से ज्यादा पूछताछ की। सांसदों के बहुत बड़े वर्ग ने हस्ताक्षर करके

अमरीका को लिखा कि नरेंद्र मोदी को वीजा न दिया जाए। 2002 के गुजरात दंगों को लेकर चलाए प्रचंड अभियान का असर इतना था कि कुछ अन्य देशों के सांसदों तक ने उनके विरुद्ध समूह बनाकर अपने देशों में आवाज उठाई। 2004 से 2014 तक केंद्र में मोदी की घोर विरोधी

फैसला दिया, प्रधानमंत्री बनने के 8 वर्ष बाद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसी के विरुद्ध प्रतिशोध की भावना से काम नहीं किया, अन्यथा न्यायालय ने कहा था कि मामले को गर्म बनाए रखने के लिए याचिकाकर्ताओं ने कानून का दुरुपयोग किया, याचिका में गलत दावे किए गए। न्यायालय ने मामले को सनसनीखेज बनाने वाले अधिकारियों के खिलाफ कानून से सम्मत कार्रवाई की। 2013 में जब उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अभियान शुरू किया, निजी चरित्र पर भी गंदे आरोप लगाए गए। वस्तुतः मोदी ने इन सबको भुलाकर सकारात्मक राजनीति तथा भारत के अपने सपने को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित रखा है। मोदी ने राजनीति और लोकतंत्र में नए सिरे से लोगों की रुचि पैदा की। उनकी सभाओं में अपार जन समूह उमड़ने लगा जो अतुलनीय था। विरोधियों ने उसका भी मजाक उड़ाया और उसे दिखावा, झूठा आदि साबित

करने का प्रयास किया। जिस पार्टी को हिंदी पट्टी और कुछ जातियों का करार देकर आलोचक लंबे–लंबे लेख लिखते थे या विचार प्रकट करते थे वह संपूर्ण देश की पार्टी बन गई। मोदी के कारण यह मिथ भी ध्वस्त हुआ कि देश में बगैर मुस्लिम वोट के किसी पार्टी को बहुमत नहीं मिल सकता। शासन के स्तर पर मोदी ने लोगों के अंदर विकास की अपेक्षाएं पैदा कीं, नई–नई योजनाएं दीं, जमीन पर उतारने के लिए मौलिक रूप से अलग तरीके से भी काम किया। साथ ही धर्म, सम्भ्यता–संस्कृति के मूल स्वर को भी नीतियों में मुखर होकर लागू किया और करवाया। कभी मुस्लिम समुदाय के समाज सुधार की दृष्टि से एक साथ 3 तलाक के विरुद्ध कानून बन सकता है एवं वक्फ कानून को संशोधित कर न्यायपूर्ण बनाया जा सकता है, इसकी तो कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। कौन सोचता था कि धारा 370 को कोई सरकार समाप्त करके जम्मू–कश्मीर को भारत के मुख्य राज्यों या केंद्र शासित प्रदेशों के समान धरातल पर ला देगी? सरकारें पाकिस्तान की न्यूक्लियर धमकी से सहमकर सीमा पर

आतंकवाद के विरुद्ध कार्रवाई नहीं करती थीं।मोदी ने इस मिथक को भी ध्वस्त कर 3–3 बार सीमा में घुसकर कार्रवाई की, जो संपूर्ण दुनिया को हैरत में डालने वाला था। विदेश नीति में भारत निर्गुट से निकलकर सर्वगुट या अनअलाइन्ड से निकलकर ऑल अलाइंड देश बना। वह रूस के साथ है तो यूक्रेन का भी विरोधी नहीं। उसने ब्रिक्स में ईरान को बुलाया लेकिन इसराईल और अमरीका से लेकर सऊदी अरब तक से हमारे संबंध हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नरेंद्र मोदी का भारत की दृष्टि से सबसे बड़ा योगदान भारतवंशियों के अंदर अपनी सभ्यता, संस्कृति और भारत को लेकर आत्मविश्वास पैदा करना और जिस देश में हैं उनके प्रति निष्ठा रखते हुए भी भारत से लगाव पैदा करने का है जिसके परिणाम आने शुरू हो गए हैं। विरोधी भले जो कहें लेकिन मोदी भारत के इतिहास में ऐसे प्रधानमंत्री या राजनेता बन चुके हैं, जिनका असर देश–विदेश दोनों स्तरों पर लंबे समय तक कायम रहेगा। विरोधियों के लिए भी थोड़ा उदरकर विचारने और मोदी से बहुत कुछ सीखने का अवसर है।

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए न्याय और सुरक्षा का सुदृढ़ीकरण

रामदास अठावले

एक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज की नींव इस भरोसे पर टिकी होती है कि प्रत्येक नागरिक गरिमा, समानता और सुरक्षा के साथ जीवन यापन कर सके। अनुसूचित जातियों (एस.सी.) और अनुसूचित जनजातियों (एस.टी.) के लिए यह प्रतिबद्धता मजबूत संवैधानिक सुरक्षा उपायों, प्रभावी कानूनों और उत्तरदायी संस्थाओं के माध्यम से ठोस रूप लेती है। इसलिए, भारत सरकार ने अत्याचारों की रोकथाम, पीड़ितों की सुरक्षा और समय पर न्याय सुनिश्चित करने के लिए कानूनी और संस्थागत फ्रेमवर्क को लगातार मजबूत किया है। इस फ्रेमवर्क का आधार 2 प्रमुख कानून हैं–नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1955 और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989। वर्षों से इन कानूनों को विधायी संशोधनों, बेहतर राहत और पुनर्वास प्रावधानों, विशेष न्यायिक तंत्रों, शिकायत–निवारण प्रणालियों तथा राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को वित्तीय सहायता के जरिए सुदृढ़ किया गया है। न्याय के लिए अधिक सशक्त कानूनी फ्रेमवर्क रूढ़ता–आधारित अत्याचारों के प्रति संवेदनशील समुदायों की चुनौतियों का अधिक प्रभावी ढंग से समाधान करने के लिए एस. सी.ध्रंस.टी. अधिनियम, 1989 में उल्लेखनीय विकास हुआ है। इस दिशा में एक बड़ा कदम 26 जनवरी, 2016 से प्रभावी हुए संशोधनों के जरिए उठाया गया। इन संशोधनों में अपराधों की त्वरित सुनवाई के लिए अनन्य विशेष न्यायालयों की स्थापना और अनन्य

विशेष लोक अभियोजकों की नियुक्ति का प्रावधान किया गया। अधिनियम में कई नए प्रकार के अत्याचारों को भी शामिल किया गया, जिससे एस.सी. और एस.टी. समुदायों को उपलब्ध कानूनी सुरक्षा का दायरा व्यापक हुआ। यह स्वीकार करते हुए कि न्याय केवल मामले के पंजीकरण और मुकद्दमे की सुनवाई तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें प्रभावित लोगों की सुरक्षा, गरिमा और पुनर्वास भी शामिल होना चाहिए। इसके बाद, 14 अप्रैल, 2016 को एस.सी.ध्रंस.टी. नियम, 1995 में संशोधन किए गए। इन संशोधनों ने राहत और पुनर्वास फ्रेमवर्क को मजबूत किया, अत्याचार के 47 अपराधों के लिए निर्धारित राहत राशि में वृद्धि की और पीड़ितों तथा उनके आश्रितों को समय पर वित्तीय सहायता के वितरण पर जोर दिया। 20 अगस्त, 2018 को एस.सी.ध्रंस.टी. अधिनियम में किए गए संशोधन के माध्यम से और भी महत्वपूर्ण बदलाव पेश किए गए। इस संशोधन ने इस कानून के तहत मामलों में प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ.आई.आर.) दर्ज करने से पहले प्रारंभिक जांच की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया। इसके अलावा, अधिनियम के तहत अपराध के आरोपी व्यक्ति की गिरफ्तारी के लिए पूर्व अनुमति की आवश्यकता को भी हटा दिया गया। उद्देश्य बिस्वुल स्पष्ट था–प्रक्रियात्मक औपचारिकताएं एस.सी. और एस.टी. के खिलाफ अत्याचार से जुड़े अपराधों के पंजीकरण, जांच और अभियोजन में बाधा नहीं बननी चाहिएं। ये सुधार इस महत्वपूर्ण सिद्धांत को रेखांकित करते हैं कि कानून को केवल

कागजों पर ही मजबूत नहीं होना चाहिए, बल्कि जब कोई पीड़ित सुरक्षा और न्याय की गुहार लगाए, तब उसे सुलभ और संवेदनशील भी होना चाहिए। राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, एस.सी.ध्रंस.टी. (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 के तहत अपराधों की सुनवाई के लिए 15 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 217 अनन्य विशेष न्यायालय स्थापित किए जा चुके हैं। अनन्य विशेष न्यायालयों की स्थापना और सुदृढ़ीकरण का उद्देश्य अधिनियम के तहत मामलों की त्वरित सुनवाई और प्रभावी निस्तारण को सुगम बनाना, साथ ही यह सुनिश्चित करना है कि पीड़ितों की पहुंच विशेष न्यायिक तंत्र तक हो। कानूनी सुरक्षा तभी सार्थक होती है जब नागरिक अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हों और उचित सहायता प्राप्त कर सकें। इसे ध्यान में रखते हुए, 13 दिसम्बर, 2021 को एस.सी. और एस.टी. पर अत्याचार के खिलाफ राष्ट्रीय हैल्पलाइन शुरू की गई, जिसे बाद में ‘संबल’ नाम दिया गया। टोल–फ्री नंबर 1800–202–1989 और शॉर्ट कोड हैल्पलाइन 14566 को एस.सी.ध्रंस.टी. अधिनियम के प्रावधानों के बारे में अधिक जागरूकता फैलाने और सूचना, मार्गदर्शन तथा शिकायत निवारण तंत्र तक पहुंच को आसान बनाने के लिए तैयार किया गया है। किसी भी कानून की प्रभावशीलता अंततः उसके क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। इसलिए, सरकार ने हितधारकों तथा संबंधित मंत्रालयों और विभागों के

साथ परामर्श के बाद पी.सी.आर. अधिनियम, 1955 और एस. सी.ध्रंस.टी. अधिनियम, 1989 के प्रभावी कार्यान्वयन को सुविधाजनक बनाने के लिए योजना दिशानिर्देश जारी किए हैं। सरकार ने कार्यान्वयन के दौरान सामने आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों का भी समाधान किया है। स्पष्टता और एकरूपता लाने के लिए, 20 जून, 2025 को जारी एक स्पष्टीकरण में यह निर्धारित किया गया कि एस.सी.ध्रंस.टी. नियमों के तहत निर्धारित राहत राशि उस राज्य या केंद्र शासित प्रदेश द्वारा प्रदान की जाएगी, जहां अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है। ऐसे उपाय महत्वपूर्ण हैं क्योंकि कानून के तहत उपलब्ध सुरक्षा तब भी प्रभावी रहनी चाहिए जब पीड़ित या उनके आश्रित राज्य या केंद्र शासित प्रदेश की सीमाओं से बाहर चले जाएं। वर्ष 2014–15 से अब तक इस योजना के तहत 5,012.17 करोड़ रुपए की केंद्रीय सहायता जारी की जा चुकी है। इस अवधि के दौरान, अत्याचार के लगभग 7,26,588 पीड़ितों को राहत प्रदान की गई, जबकि 2,21,716 जोड़ों को अंतरजातीय विवाह के लिए प्रोत्साहन राशि प्राप्त हुई है। हमारी प्रतिबद्धता केवल अत्याचार होने के बाद प्रतिक्रिया देने तक सीमित नहीं है। यह समान रूप से रोकथाम, जागरूकता, संस्थागत जवाबदेही, समय पर राहत, पुनर्वास और ऐसी परिस्थितियां बनाने के बारे में भी है, जिसमें प्रत्येक नागरिक गरिमा के साथ और बिना किसी डर के जी सके।



मानसिक स्वास्थ्य को लेकर समाज में अब पहले से ज्यादा बातचीत होने लगी है। इस बदलाव में फिल्मी सितारों की भूमिका भी अहम रही है। बॉलीवुड की कई हस्तियों ने अपने निजी अनुभव साझा कर बताया है कि शोहरत और सफलता के बावजूद इंसान भावनात्मक परेशानियों से गुजर सकता है। डिप्रेशन से लेकर थरेपी और रिकवरी तक के अपने अनुभवों के जरिए इन सितारों ने लोगों को मानसिक स्वास्थ्य को गंभीरता से लेने और जरूरत पड़ने पर मदद मांगने के लिए प्रेरित किया है। हर साल 10 अक्टूबर को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। इस मौके पर आइए जानते हैं बॉलीवुड की उन पांच हस्तियों के बारे में, जिन्होंने मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े अपने अनुभवों पर खुलकर बात की और इस विषय पर जागरूकता बढ़ाने की कोशिश की।

दीपिका पादुकोण: डिप्रेशन पर खुलकर बात कर तोड़ी चुप्पी दीपिका पादुकोण उन अभिनेत्रियों में शामिल हैं, जिन्होंने भारत में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर खुलकर बातचीत करने में अहम भूमिका निभाई। साल 2015 में उन्होंने अपने डिप्रेशन के अनुभव को सार्वजनिक किया। उस दौर में मानसिक स्वास्थ्य पर बात करना आसान नहीं था, लेकिन दीपिका ने अपने अनुभव के जरिए यह संदेश दिया कि कामयाबी और पहचान किसी को भी भावनात्मक परेशानियों से पूरी तरह सुरक्षित नहीं रख सकती। अपने अनुभव के बाद दीपिका ने द लिव लव लाफ फाउंडेशन की शुरुआत की। यह संस्था मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने और इससे जुड़े भ्रम दूर करने की दिशा में काम करती है। दीपिका लगातार इस बात पर जोर देती रही हैं कि अपनी भावनाओं को समझना, परेशानी को स्वीकार करना और जरूरत पड़ने पर विशेषज्ञ की मदद लेना कमजोरी नहीं, बल्कि खुद की देखभाल का जरूरी हिस्सा है।

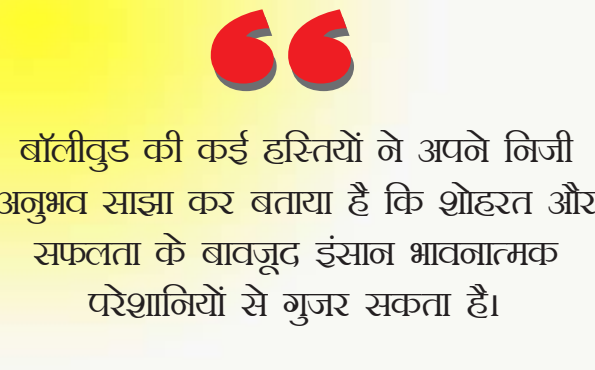
आमिर खान: मुश्किल दौर में मदद लेने की अहमियत अभिनेता आमिर खान भी अपनी निजी जिंदगी के मुश्किल दौर

’पहला प्यार दूसरी बार के नए गाने जाने किस मोड़ पे को मिल रहा है दर्शकों का जबरदस्त रिएक्शन

पहला प्यार दूसरी बार के मेकर्स ने बेसब्री, पुरानी यादों और युवा प्यार के एहसास को समेटने वाले नए गाने जाने किस मोड़ पे को रिलीज कर दिया है। गाने को दर्शन रावल ने अपनी आवाज से सजाया है, जबकि गुरप्रीत सैनी ने इसके बोल लिखे हैं। गाना खुद में इन तीनों दोस्तों के सफर को लिए हुए हैं। गाने में उन्हें हम अपने स्कूल रीयूनियन में जाते हुए देख सकते हैं, हालांकि उनकी इस ट्रिप के पीछे एक बड़ी वजह है और वो है अपने पहले क्रश से फिर से देखने और उससे मिलने की उम्मीद। यह उनके सफर में अचानक आने वाले बदलाव को दिखाता है और यह भी की किस तरह से वह नहीं जानते कि आने वाला समय के साथ अगला मोड़ उनके लिए क्या लेकर आ रहा है। गाना खुद में हल्के-फुल्के और यूथफुल साउंड के साथ आता है। यह फिल्म में मौजूद दोस्ती ही नहीं बल्कि उसके साथ रोमांस और जिंदगी में फिर दूसरी बार मौका मिलने जैसी थीम को खूबसूरती से पेश करता है। यह उस एक्साइटमेंट और इंतजार को बखूबी दिखाता है, जब पहला प्यार को दूसरी बार मौका मिलता है। गाने के बारे में बात करते हुए दर्शन रावल ने कहा है, जाने किस मोड़ पे में इंतजार और उम्मीद का खूबसूरत एहसास है। मुझे इस गाने की ये यूथफुल और याद आने वाले इमोशन बहुत पसंद आए हैं, और मुझे उम्मीद है कि ये लिस्टर्नर को उनकी अपनी कुछ यादों में वापस ले जाएगा। यह उस जगह और उस इंसान के पास वापस जाने की बात है, जो कभी आपकी जिंदगी का बेहद जरूरी हिस्सा था, और ये सोचने की भी है कि उन्हें दोबारा देखकर किस तरह की फीलिंग



मानसिक स्वास्थ्य पर खुलकर बोले बॉलीवुड के ये 5 सितारे, साझा किया संघर्ष



न्यूरोडाइवासेंटी और खुद को स्वीकार करने पर चर्चा को आगे बढ़ाया है। अप्रैल 2026 में सोशल मीडिया पर साझा किए गए एक वीडियो में उन्होंने बताया कि थरेपी और खुद को समझने की प्रक्रिया से उन्हें अपने विचारों और भावनाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली। कुब्रा ने एडीएचडी को अपनी सुपरपावर बताते हुए अपनी भावनाओं को गहराई से महसूस करने की बात कही। उन्होंने यह भी बताया कि अपने व्यवहार और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के पीछे के पैटर्न को समझना उनके लिए कितना अहम रहा। उनके अनुभव इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि हर व्यक्ति का सोचने और महसूस करने का तरीका अलग हो सकता है। खुद को समझना और जरूरत के अनुसार सहायता लेना आत्मविश्वास बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं।

यो यो हनी सिंह: मानसिक स्वास्थ्य से रिकवरी तक का सफर रैपर और गायक यो यो हनी सिंह भी मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी अपनी चुनौतियों के बारे में खुलकर बात कर चुके हैं। अपने करियर के एक दौर में वह लाइमलाइट से दूर हो गए थे। बाद में उन्होंने अपनी मानसिक स्थिति, इलाज और वापसी के सफर के बारे में कई मौकों पर अनुभव साझा किए। हनी सिंह ने बताया है कि मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी परेशानियों का असर उनकी निजी जिंदगी और करियर पर पड़ा। उनके अनुभव इस बात को सामने लाते हैं कि रिकवरी हमेशा तुरंत नहीं होती और कई बार इसके लिए समय, इलाज और लगातार देखभाल की जरूरत पड़ती है। उनकी कहानी यह भी याद दिलाती है कि बाहर से आत्मविश्वासी और सफल दिखने वाला व्यक्ति भी गंभीर चुनौतियों से गुजर सकता है।

इन पांचों हस्तियों के अनुभव अलग-अलग हैं, लेकिन इनसे जुड़ा संदेश एक ही है मानसिक स्वास्थ्य को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। परेशानी होने पर किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात करना और जरूरत पड़ने पर योग्य मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ की मदद लेना महत्वपूर्ण है। अपनी भावनाओं को स्वीकार करना और मदद मांगने में संकोच न करना खुद की देखभाल की दिशा में एक जरूरी कदम है।



महसूस होगी। रोचक कोहली कहते हैं, एक सफर जैसा महसूस होता है जाने किस मोड़ पे गाने में, एक ऐसा एहसास जिसमें आप नहीं जानते कि आखिर में क्या होने वाला है। हम चाहते थे कि संगीत में सालों बाद अपने पहले क्रश से मिलने की एक्साइटमेंट और घबराहट, दोनों का मिला-जुला एहसास महसूस किया जा सके। गाने में दर्शन की आवाज प्यार से भरा अपनापन और यूथफुल एनर्जी को साथ लाती है, जबकि गुरप्रीत द्वारा लिखे गए बोल उस इमोशन को खूबसूरती से पूरा करते हैं। लिरिसिस्ट गुरप्रीत सैनी गाने के बारे में बात करते हुए कहते हैं, “श्जाने किस मोड़ पे़र उम्मीद बनाए रखने और बिना कुछ सोचे, नई जगहों और तरीकों से प्यार पाने के बारे में है। इसीलिए मैंने इसके बोल बहुत ईजी और फ्लो के साथ जाने वाले रखे हैं, ठीक वैसे ही जैसे फिल्म के किरदार हैं, जो एक

स्कूल रीयूनियन के लिए जा रहे हैं, जिसमें हर किसी के मन में प्यार की एक उम्मीद है। इस गाने में यूथफुल एनर्जी, फ्रेंडशिप और रोमांस का एक बहुत खूबसूरत मेल है, जिसे रोचक के कपोजिशन ने बहुत खूबसूरत तरीके से आकार देते हुए पेश किया है।गाना अब टी – सीरीज म्यूजिक पर उपलब्ध है। जिसमें स्पर्श वालिया, अलीशा चोपड़ा, कुणाल वैद, साक्षी वैद्या, तुषार छिब्बर और सरगुन कौर लूथरा नजर आ रहे हैं, जो इस फिल्म के साथ अपना डेब्यू कर रहे हैं। फिल्म पहला प्यार दूसरी बार को लव रंजन और अंकुर गर्ग ने साथ मिलकर को-प्रोड्यूस किया है, फिल्म यूथ, लव और साथ रहने की एक फ्रेश और दिल छू लेने वाली कहानी पेश करने का वादा करती है। यह फिल्म 23 अक्टूबर, 2026 को देशभर के सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है।

रामायणम् से लारा दत्ता और शीबा चड्ढा के नए पोस्टर रिलीज, कैकेयी-मंथरा के किरदारों की झलक

नितेश तिवारी की फिल्म ‘रामायणम्’ को लेकर दर्शकों के बीच उत्सुकता लगातार बढ़ रही है। इसी बीच मेकर्स ने फिल्म के दो अहम किरदारों के नए पोस्टर्स जारी किए हैं। इन पोस्टर्स में अभिनेत्री लारा दत्ता रानी कैकेयी और शीबा चड्ढा मंथरा के किरदार में नजर आ रही हैं। दोनों के लुक सामने आने के बाद फिल्म में रामायण की महत्वपूर्ण घटनाओं को किस तरह दिखाया जाएगा, इसे लेकर चर्चा तेज हो गई है।फिल्म के नए पोस्टर में लारा दत्ता रानी कैकेयी के शाही अवतार में दिखाई दे रही हैं। पारंपरिक पोशाक और भारी गहनों के साथ उनका लुक अयोध्या की रानी की भव्यता को दर्शाता है। रामायण की कहानी में कैकेयी का किरदार बेहद अहम है, क्योंकि उनकी दो इच्छाओं के कारण राजा दशरथ और भगवान राम



प्रहार: राजकुमार राव और जयदीप अहलावत की जोड़ी लेकर आए अविनाश अरुण

फिल्मों में दमदार अभिनय के लिए पहचाने जाने वाले राजकुमार राव और जयदीप अहलावत जल्द ही फिल्म प्रहार द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ उज्ज्वल निकम में एक साथ नजर आएंगे। निर्देशक अविनाश अरुण धाावारे की इस फिल्म को लेकर खास बात यह है कि तीनों कलाकारों का एक-दूसरे से पुराना रिश्ता रहा है। फिल्म को लेकर राजकुमार ने जयदीप के साथ अपनी दोस्ती और आपसी सहजता के बारे में बात की, वहीं निर्देशक अविनाश ने दोनों अभिनेताओं को एक ही प्रोजेक्ट में साथ लाने पर खुशी जाहिर की। राजकुमार राव ने जयदीप अहलावत के साथ अपने संबंधों पर बात करते हुए कहा कि दोनों एक ही संस्थान में पढ़ चुके हैं और एक-दूसरे को लंबे समय से जानते हैं। राजकुमार के मुताबिक, साथ बिताए वर्षों की वजह से उनके बीच एक खास सहजता है, जो साथ काम करते समय भी नजर आती है। अभिनेता ने कहा, “जयदीप मेरे क्लासमेट हैं और एक शानदार अभिनेता हैं। हमारे बीच एक सहजता है, क्योंकि हमने कई साल साथ बिताए हैं। हमारे निर्देशक अविनाश अरुण भी संस्थान में हमसे जूनियर थे।” राजकुमार की बातों से साफ है कि इस फिल्म में साथ काम करना उनके लिए सिर्फ एक पेशेवर अनुभव नहीं, बल्कि पुराने साथियों के साथ जुड़ने का मौका भी है। निर्देशक अविनाश अरुण धावारे ने भी राजकुमार राव के साथ अपने पुराने जुड़ाव का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि राजकुमार उनके संस्थान के दिनों के दोस्त हैं और उन्हें लंबे समय से साथ काम करने का इंतजार था। ऐसे में ‘प्रहार’ के जरिए यह मौका मिलना उनके लिए खास है। अविनाश ने कहा, “राजकुमार एक बेहतरीन अभिनेता हैं और संस्थान के दिनों से मेरे दोस्त हैं। हमें पहले कभी साथ काम करने का मौका नहीं मिला। मैं खुद को खुशकिस्मत मानता हूँ कि हमें ‘प्रहार’ जैसी फिल्म पर साथ काम करने का अवसर मिला। यह प्रोजेक्ट हम सभी के लिए बेहद खास है और मुझे खुशी है कि मैं जयदीप और राजकुमार जैसे भारत के दो बेहतरीन अभिनेताओं को एक साथ ला सका।” प्रहार द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ उज्ज्वल निकम में राजकुमार राव और जयदीप अहलावत के अलावा वामिका गब्बी, सिकंदर खेर, तरुण शर्मा और ललित प्रभाकर भी नजर आएंगे। फिल्म का निर्देशन अविनाश अरुण धावारे ने किया है। इसकी कहानी 26/11 मुंबई आतंकी हमलों के बाद देश की सबसे महत्वपूर्ण कानूनी लड़ाइयों में से एक से जुड़ी घटनाओं पर आधारित है। मैडॉक फिल्म्स के बैनर तले बनी यह फिल्म उज्ज्वल निकम की कहानी को बड़े पर्दे पर पेश करेगी। फिल्म में अनुभवी कलाकारों की मौजूदगी और निर्देशक के साथ राजकुमार के पुराने रिश्ते ने इस प्रोजेक्ट को खास बना दिया है। प्रहार द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ उज्ज्वल निकम 16 अक्टूबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। राजकुमार राव और जयदीप अहलावत जैसे कलाकारों को एक साथ देखने के लिए दर्शकों को इस फिल्म का इंतजार रहेगा। अब देखना होगा कि निर्देशक अविनाश अरुण की यह फिल्म बड़े पर्दे पर किस तरह अपनी कहानी पेश करती है।



नवरात्रि में चाहिए चोली के साथ स्टाइल करें 6 ट्रेंडी ऑक्सीडाइज्ड ज्वेलरी डिजाइंस

शारदीय नवरात्रि में गरबा और डांडिया नाइट्स के दौरान पारंपरिक चनिया चोली के साथ ऑक्सीडाइज्ड ज्वेलरी काफी स्टाइलिश लगती है। अपने लुक को खास बनाने के लिए आप हैवी झुमके, माथा पट्टी, नथ, चोकर, कड़े और बाजूबंद जैसे ट्रेंडी विकल्प चुन सकती हैं। ये आभूषण आपको गरबा में परफेक्ट पारंपरिक और क्लासी लुक देते हैं।

शारदीय नवरात्रि का समय बेहद खास होता है। नवरात्र के इन 9 दिनों को बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। हर जगह गरबा और डांडिया नाइट्स की धूम देखने को मिलती है। इस दौरान महिलाएं गरबा और डांडिया नाइट्स के लिए अधिकतर महिलाएं रंग–बिरंग पारंपरिक चनिया चोली पहनें नजर आएंगी।

यदि आप भी अपने लुक स्टाइलिश बनाना चाहती हैं, तो परफेक्ट गरबा लुक के लिए कुछ ट्रेंज़ी ऑक्सीडाइज्ड ज्वेलरी शामिल कर सकती हैं। वैसे यह न सिर्फ़ दिखने में क्लासी लगती हैं, बल्कि चनिया चोली के साथ ख़ूब जवेंगी।

डांडिया नाइट्स के लिए 6 ट्रेंडी ऑक्सीडाइज्ड ज्वेलरी डिजाइंस

अगर आप भी डांडिया और गरबा नाइट्स में जलवे बिखरना चाहते हैं, तो ऑक्सीडाइज्ड ज्वेलरी के इन 6 ट्रेंडी डिजाइंस के बारे में, जिसे आप चनिया चोली के साथ पहनी जाती है।

हैवी ऑक्सीडाइज्ड झुमके

यदि आप डांडिया नाइट में चनिया चोली के साथ हैवी नेकलेस नहीं पहनना चाहते हैं, तो आप इसके जगह बड़े साइज के ऑक्सीडाइज्ड झुमके या चांदबालियां पहन सकती हैं। वहीं, चनिया चोली लुक को खास बनाने के साथ कम ज्वेलरी में भी चेहरे की खूबसूरती बढ़ा सकते हैं।

ट्रेडिशनल माथा पट्टी या बोड़ला

अगर आप एकदम गुजराती या राजस्थानी टच पाना चाहते हैं, तो आप ऑक्सीडाइज्ड माथा पट्टी सबसे बेस्ट ऑप्शन हो सकता है। इसको पहनने से आपके लुक में चार चांद लग जाएंगे।

नोज पिन या नथ

गरबा लुक को परफेक्ट बनाने के लिए आप ऑक्सीडाइज्ड नोज पिन कैरी कर सकते हैं। इस तरह की क्लिप–ऑन ऑक्सीडाइज्ड नोज पिन चेहरे की खूबसूरती बढ़ाएगा। यदि आपकी नाक छिदी नहीं है, तो आप इस तरह की नोज पिन वियर कर सकते हैं।

हैवी ऑक्सीडाइज्ड चोकर सेट

अगर आपका ब्लाउज का गला डीप या सिंपल है, तो आप चनिया चोली के साथ सुंदर हैवी ऑक्सीडाइज्ड चोकर नेकलेस पहन सकते हैं। यह आपके गले की खूबसूरती को बढ़ाने में मदद करेगा। साथ ही चनिया चोली में आप एकदम अलग नजर आएंगे।

ऑक्सीडाइज्ड कड़े

चनिया चोली के लुक को खास बनाने के लिए आप ऑक्सीडाइज्ड कड़े पहन सकते हैं। यह पहनने पर चूड़ी के मुताबिक थोड़े हल्के लगते हैं। खासकर चनिया चोली के साथ आप इन्हें आसानी से कैरी कर सकते हैं।

ऑक्सीडाइज्ड बाजूबंद

गरबा नाइट्स के लिए परफेक्ट लुक बनाने के लिए आप चनिया चोली के साथ ही बाजूबंद पहन सकती है। अगर आप स्लीवलेस या कट–स्लीव्स ब्लाउज पहन रही है, तो इसके साथ ऑक्सीडाइज्ड बाजूबंद जरूर पेयर करें। वैसे यह आपको परफेक्ट पारंपरिक गुजराती लुक देगा।



विविध

सिर्फ स्क्रीन देखने से नहीं होती आंखें खराब, ना खेलने- कूदने वाले बच्चों को जल्दी लगता है चश्मा

होमवर्क के बाद बच्चे का अपनी आंखें मलना, टैबलेट के बहुत पास बैठकर उसे देखना या आंखों के थकने की शिकायत करना ये बातें छोटी लग सकती हैं। लेकिन नेत्र रोग विशेषज्ञ का मानना छद् है कि जब बच्चा दिन का ज्यादातर समय स्क्रीन के सामने बिताता है, तो इन लक्षणों पर ध्यान देना जरूरी है। चिंता की बात सिर्फ यह नहीं है कि बच्चे डिवाइस पर कितना समय बिता रहे हैं। बल्कि लंबे समय तक पास की चीजों पर ध्यान केंद्रित करने, कम ब्रेक लेने और घर के बाहर कम समय बिताने का विकासशील आंखों पर क्या असर पड़ रहा है यह अहम है।

स्क्रीन है सबसे बड़ी समस्या

डॉक्टरों ने बताया— बच्चों और किशोरों में श्डिजिटल आई स्ट्रेनश (आंखों पर डिजिटल तनाव) की समस्या तेजी से देखी जा रही है, जो लंबे समय तक फोन, टैबलेट और कंप्यूटर की स्क्रीन देखते रहते हैं। स्क्रीन पर ध्यान केंद्रित करने से पलकें झपकाने की गति कम हो जाती है, जिससे टियर फिल्म (आंखों की नमी की परत) अस्थिर हो सकती है और आंखों में सूखापन, जलन, पानी आना, धुंधला दिखना और सिरदर्द जैसी समस्याएं हो सकती हैं। इससे भी अहम बात यह है कि जो बच्चे रोजाना कुल मिलाकर तीन से साढ़े तीन घंटे से ज्यादा समय तक डिजिटल डिवाइस का इस्तेमाल करते थे, उनमें श्ज़्आई आईश् का खतरा काफी ज्यादा था। साथ ही, कंप्यूटर के इस्तेमाल में हर आधे घंटे की बढ़ोतरी के साथ मध्यम से गंभीर लक्षण होने की संभावना भी बढ़ जाती थी।

इन बातों को नजरअंदाज ना करें पेरेंट्स

डॉक्टरों के अनुसार इसका मतलब यह नहीं है कि स्क्रीन से आंखों को हमेशा के लिए नुकसान पहुंचता है। समस्या अक्सर



नवरात्रि का त्योहार आते ही घरों में साफ—सफाई और सजावट शुरू हो जाती है। हर कोई चाहता है कि मां दुर्गा का स्वागत खास तरीके से किया जाए। इस दौरान घर के मुख्य द्वार को फूलों, रंगोली और दीपकों से सजाने की परंपरा है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, घर की देहरी पर माता के चरण बनाना शुभ माना जाता है। मान्यता है कि इससे घर में सुख—समृद्धि आती है और वातावरण सकारात्मक बना रहता है। लेकिन अगर आपको रंगोली बनाना नहीं आता या आप बड़ी और मुश्किल डिजाइन बनाने में समय नहीं लगाना चाहते, तो परेशान होने की जरूरत नहीं है। आप गेरू, सफेद रंगोली पाउडर और कॉटन बड की मदद से आसानी से मातारानी के सुंदर चरण बना सकते हैं। इसके लिए आपको किसी खास हुनर की जरूरत नहीं है। थोड़ी—सी मेहनत और सही तरीके से आप अपने घर के मुख्य द्वार या पूजा स्थल को खूबसूरत बना सकते हैं।

सफेद और रंगीन रंगोली से बनाएं सुंदर चरण

अगर आप चाहते हैं कि मातारानी के चरण दूर से ही खूबसूरत नजर आएं, तो रंगीन रंगोली पाउडर का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए सबसे पहले फर्श को अच्छी तरह साफ कर लें। अब सफेद रंगोली पाउडर से दोनों चरणों की बाहरी आकृति बनाएं। ध्यान रखें कि दोनों चरणों का आकार लगभग एक जैसा हो। इसके बाद एक चरण के अंदर लाल और दूसरे में पीला रंग भर सकते हैं। आप चाहें तो दोनों चरणों को एक ही रंग से भी सजा सकते हैं। अब कॉटन बड की मदद से ऊपर की तरफ छोटी—छोटी उंगलियों के निशान बनाएं। किनारों को साफ कर दें, ताकि डिजाइन सुंदर और व्यवस्थित दिखाई दे। यह रंगोली डिजाइन नवरात्रि के दौरान घर के मुख्य द्वार पर काफी आकर्षक लगेगी।

स्वस्तिक और त्रिशूल से बढ़ाएं रंगोली की खूबसूरती

मातारानी के चरणों के साथ छोटे—छोटे धार्मिक प्रतीक बनाकर रंगोली को और भी सुंदर बनाया जा सकता है। चरणों के ऊपर या नीचे सफेद रंग से श्घ्र या स्वस्तिक बना सकते हैं। अगर जगह थोड़ी ज्यादा है, तो दोनों तरफ छोटे दीपक या त्रिशूल की आकृति भी बनाई जा सकती है। इन प्रतीकों को बनाने के लिए बहुत ज्यादा रंगों की जरूरत नहीं होती। आप सफेद, लाल या पीले रंग का इस्तेमाल कर सकते हैं। बस ध्यान रखें कि डिजाइन बहुत ज्यादा भरी हुई न लगे। चरणों के आसपास थोड़ी खाली जगह रखने से पूरी रंगोली साफ और सुंदर दिखाई देती है।

फूलों की पंखुड़ियों से सजाएं मातारानी के चरण



इस्तेमाल के तरीके में होती है, जैसे लंबे समय तक बिना रुके पास की चीजों पर ध्यान लगाकर काम करना, देखने की गलत



दूरी, चकाचौंध और बीच—बीच में पर्याप्त ब्रेक न लेना। बच्चों की आंखों की सेहत का एक और पहलू है जिसे माता—पिता को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए, और वह है उनके घर से बाहर

बिताया जाने वाला समय। मायोपिया, या निकट—दृष्टि दोष, बच्चों और किशोरों में तेजी से आम होता जा रहा है। मायोपिया होने में कई चीजें भूमिका निभा सकती हैं, जैसे कि जेनेटिक्स (आनुवंशिकी), लंबे समय तक पास की चीजों पर ध्यान केंद्रित करके काम करना, पढ़ाई—लिखाई का दबाव और घर से बाहर कम समय बिताना।

खेलने—कूदने से भी होता है आंखों को नुकसान

आंखों के डॉक्टर ने बताया कि रिसर्च से लगातार यह पता चला है कि घर से बाहर समय बिताने से बच्चों की आंखों की सुरक्षा हो सकती है। इसी वजह से घर से बाहर खेलना बच्चे की रोजमर्रा की दिनचर्या का एक अहम हिस्सा बन जाता है, खासकर तब जब स्क्रीन का इस्तेमाल उस समय को लेने लगता है जो असल में खेलने—कूदने, घूमने—फिरने और अलग—अलग दूरी पर रखी चीजों को देखने में बिताया जाना चाहिए था आंखों की अच्छी सेहत बनाए रखने के लिए मकसद टेक्नोलॉजी को पूरी तरह हटाना नहीं होना चाहिए, सके बजाय, बच्चों को स्क्रीन के इस्तेमाल से जुड़ी बेहतर आदतें अपनाने की जरूरत है।

बच्चों को सिखाएं 20—20—20 का नियम

डॉक्टरों ने बताया— माता—पिता को बच्चों को नियमित रूप से आंखों को आराम देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जिसमें श्20—20—20श् का तरीका शामिल है, यानी हर 20 मिनट तक पास की चीजों पर काम करने के बाद, कम से कम 20 सेकंड के लिए लगभग 20 फीट दूर किसी चीज को देखें। डिवाइस को आरामदायक दूरी पर रखना चाहिए, साथ ही कमरे में रोशनी अच्छी होनी चाहिए और स्क्रीन पर कम से कम चमक (हसंतम) आनी चाहिए। बच्चों को यह भी याद दिलाना चाहिए कि वे स्क्रीन



को लगातार घूरने के बजाय बार—बार पलकें झपकाते रहें। सबसे जरूरी बात यह है किरोजाना की दिनचर्या में घर से बाहर खेलने—कूदने को शामिल करने पर जोर दें।

नवरात्रि में घर के द्वार पर बनाएं मातारानी के शुभ चरण, भिनलों में तैयार होगी सुंदर रंगोली

गोल आकृतियां बनाना आसान होता है। आप इसे सफेद रंगोली पाउडर, गेरू या दूसरे रंगों के साथ इस्तेमाल कर सकते हैं।

चरण बनाने का आसान तरीका

सबसे पहले फर्श को अच्छी तरह साफ और सूखा लें।

चॉक या हल्की पेंसिल से चरणों की बाहरी आकृति बना लें, ताकि आकार बिगड़े नहीं।

गेरू या रंगोली पाउडर से एड़ी और तलवे का आकार तैयार करें।

कॉटन बड से उंगलियों के निशान बनाएं।

सफेद रंग से किनारों पर हल्की रेखा खींचें।

आखिर में फूलों की पंखुड़ियों या छोटे दीपकों से सजावट पूरी करें।

इस तरीके से आप बिना किसी मुश्किल डिजाइन के सुंदर चरण बना सकते हैं। अगर पहली बार में आकार सही नहीं बनता, तो उसे साफ करके दोबारा बनाने में भी ज्यादा समय नहीं लगेगा।

रंगोली को लंबे समय तक सुंदर बनाए रखने के टिप्स

नवरात्रि के दौरान कई लोग चाहते हैं कि घर की सजावट एक—दो दिन में खराब न हो। इसके लिए रंगोली बनाते समय कुछ छोटी बातों का ध्यान रखना जरूरी है।

सूखे फर्श पर बनाएं रंगोली: गीले फर्श पर रंगोली पाउडर ठीक से नहीं टिकता और डिजाइन जल्दी खराब हो सकती है। हाथों के निशान साफ करें: रंग भरते समय उंगलियों से रंग फैल सकता है। इसके लिए सूखे, मुलायम कपड़े या छोटे ब्रश का इस्तेमाल करें।

कम रंगों का इस्तेमाल करें: दो या तीन रंगों से भी बहुत सुंदर डिजाइन बनाई जा सकती है।

आने—जाने वाली जगह का ध्यान रखें: मुख्य द्वार पर ऐसी जगह रंगोली बनाएं, जहां पैरों से डिजाइन खराब होने की आशंका कम हो। रंग चुनते समय सावधानी रखें: अगर रंगोली कई दिनों तक बनाए रखनी है, तो फर्श के अनुकूल रंगों का इस्तेमाल करें। एक्रिलिक रंग इस्तेमाल करने से पहले फर्श के छोटे हिस्से पर जांच कर लें, क्योंकि कुछ सतहों पर इनके दाग पड़ सकते हैं।

नवरात्रि में क्यों बनाए जाते हैं मातारानी के चरण

नवरात्रि में मां दुर्गा की पूजा और स्वागत का विशेष महत्व माना जाता है। इसी भावना से कई घरों में मुख्य द्वार या पूजा स्थल के पास माता के चरण बनाए जाते हैं। कुछ परिवारों में इसे देवी के घर आगमन का प्रतीक माना जाता है, जबकि कई जगह लक्ष्मी चरण बनाने की भी परंपरा है। हालांकि, चरण बनाने का तरीका और उससे जुड़ी परंपराएं अलग—अलग क्षेत्रों और परिवारों में भिन्न हो सकती हैं। आप अपनी आस्था और पसंद के अनुसार गेरू, सफेद रंगोली, फूलों या रंगीन पाउडर से इन्हें बना सकते हैं। इस नवरात्रि घर को सजाने के लिए आपको महंगी सजावट या मुश्किल रंगोली बनाने की जरूरत नहीं है।

सक्षिप्त



शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के बाद गिरावट

नई दिल्ली,एजेंसी। वैश्विक चिंताओं, विदेशी निवेश निकासी और मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव के कारण भारतीय शेयर बाजार सोमवार को भारी गिरावट के साथ बंद हुए। सेंसेक्स 547.65 अंक या 0.76 फीसदी गिरकर 71,924.68 पर आ गया। वहीं, निफ्टी 50 भी 157.10 अंक या 0.70 फीसदी फिसलकर 22,363.35 पर बंद हुआ। निवेशकों की कमजोर धारणा और मुद्रास्फीति की चिंताएं बाजार पर हावी रहीं। कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें और विदेशी संस्थागत निवेशकों (थ्र) की लगातार बिकवाली ने घरेलू इक्विटी पर दबाव बढ़ाया। पीएल कैपिटल के मुख्य कारोबार अधिकारी विक्रम कसाट ने बताया कि भारतीय इक्विटी में तेज बिकवाली हुई। 10-वर्षीय सरकारी बॉन्ड की बढ़ती आय और कमजोर वैश्विक संकेतों ने जोखिम लेने की क्षमता को कम किया। मुनाफावसूली से बाजार में अस्थिरता बढ़ गई। बाजार में गिरावट के कई प्रमुख कारण थे। इनमें विदेशी निवेशकों द्वारा लगातार पूंजी की निकासी शामिल है। इसके साथ ही, सरकारी बॉन्ड की आय में वृद्धि भी एक बड़ा कारण बनी। मध्य पूर्व में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव ने भी निवेशकों की चिंताएं बढ़ा दीं। वैश्विक स्तर पर कमजोर आर्थिक संकेत और मुद्रास्फीति की आशंकाएं भी बाजार की धारणा पर नकारात्मक असर डाल रही थीं। ब्रेंट कच्चे तेल की कीमतें 1.15 फीसदी बढ़कर 106 डॉलर प्रति बैरल हो गईं। एनएसई पर क्षेत्रीय सूचकांकों में मिला-जुला कारोबार रहा। निफ्टी मीडिया सूचकांक 4 फीसदी से अधिक की वृद्धि के साथ सबसे मजबूत रहा। निफ्टी रियल्टी 0.63 फीसदी, निफ्टी ऑटो 0.60 फीसदी और निफ्टी फार्मा 0.25 फीसदी बढ़ा। वहीं, निफ्टी पीएसयू बैंक 1.31 फीसदी, निफ्टी आईटी 1.14 फीसदी, निफ्टी मेटल 0.55 फीसदी और निफ्टी प्राइवेट बैंक 0.52 फीसदी गिरा। निफ्टी 50 के शीर्ष लाभ पाने वालों में डॉ रेड्डीज लेबोरेटरीज, बजाज ऑटो, बीएसई, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, सिफ्ला और टीएमपीवी शामिल थे। अपोलो हॉस्पिटल्स, आईटीसी, टेक महिंद्रा, लार्सन एंड टुब्रो, मैक्स हेल्थकेयर और हिंडाल्को शीर्ष नुकसान पाने वाले रहे। विक्रम कसाट ने निवेशकों को सतर्क रहने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि रुपये की मजबूती और कच्चे तेल की नरम कीमतें कुछ राहत दे सकती हैं। हालांकि, ऊंची बॉन्ड आय और मुद्रास्फीति की चिंताएं अब भी जोखिम बनी हुई हैं। निवेशकों को मजबूत बुनियादी सिद्धांतों वाली कंपनियों को प्राथमिकता देनी चाहिए। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि जब तक आय की स्पष्टता और बाजार की चौड़ाई में सुधार न हो, तब तक नए निवेश को चरणबद्ध तरीके से करें। 24-कैरेट सोने का भाव 1.12 फीसदी गिरकर 1,49,800 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। चांदी 0.83 फीसदी गिरकर 2,23,870 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गई।

आईपीओ से पहले दबाव में रिलायंस का शेयर, 52 हफ्ते के निचले स्तर पर भाव, एक महीने में कितनी गिरावट?

नई दिल्ली,एजेंसी। मुकेश अंबानी की अगुवाई वाली रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) के शेयरों में देश के अब तक के सबसे बड़े आईपीओ श्रजियो प्लेटफॉर्मसइ की दस्तक से ठीक पहले बड़ा दबाव देखने को मिल रहा है। हफ्ते के पहले कारोबारी दिन रिलायंस का शेयर बिकवाली के झटकों के बीच फिसलकर 1,155.10 के 52 हफ्ते के नए निचले स्तर पर आ गया। बाजार में जारी इस गिरावट ने भले ही आम निवेशकों के बीच घबराहट पैदा की हो, लेकिन दलाल स्ट्रीट के शीर्ष एनालिस्ट्स इसे वैल्यू अनलॉकिंग से ठीक पहले खरीदारी का बेहतरीन मौका मान रहे हैं। हालिया प्रदर्शन का आंकड़ारू नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) पर सोमवार को दोपहर 1:22 बजे रिलायंस का शेयर लगभग 1 फीसदी की कमजोरी के साथ 1,159.10 पर कारोबार कर रहा था, जबकि दिन के निचले स्तर 1,155.10 को छूते हुए इसने 52-सप्ताह का नया निचला स्तर बनाया। एक महीने और सालाना गिरावटरू आंकड़ों के मुताबिक, पिछले एक महीने के दौरान इस दिग्गज शेयर में 7.90 फीसदी (लगभग 8प्रतिशत) की गिरावट आ चुकी है। वहीं, साल 2026 में अब तक रिलायंस का शेयर 26 फीसदी तक टूट चुका है। मार्केट वैल्यूएशन और आईपीओ का आकाररू ऊपरी प्राइस बैंड (६1,119) के आधार पर जियो प्लेटफॉर्मस का बाजार मूल्यांकन लगभग ६10.3 लाख करोड़ (करीब 107 अरब डॉलर) बैठता है। कंपनी इस इश्यू के जरिए करीब ६30,200 करोड़ जुटाने की योजना बना रही है, जो हासिल होने पर भारत के इतिहास का सबसे बड़ा आईपीओ साबित होगा। महत्वपूर्ण तारीखेंरू अनुमानों के मुताबिक, जियो प्लेटफॉर्मस के आईपीओ में आम निवेशकों के लिए सब्सक्रिप्शन 21 अक्टूबर को खुलकर 23 अक्टूबर को बंद हो सकता है, जबकि शेयरों की लिस्टिंग 28 अक्तूबर को संभावित है। होलिंग कंपनी डिस्काउंट में कमी ब्रोकरेज फर्म मोतीलाल ओसवाल के विश्लेषण के अनुसार, रिलायंस के मौजूदा शेयर भाव में जियो में उसकी हिस्सेदारी पर फिलहाल 18प्रतिशत से 36प्रतिशत का होलिंग कंपनी डिस्काउंट शामिल है। स्वतंत्र मूल्यांकन से री-रेटिंगरू बाजार में लिस्टिंग के बाद जियो प्लेटफॉर्मस का स्वतंत्र बाजार मूल्य तय होगा। मोतीलाल ओसवाल ने जियो प्लेटफॉर्मस की कुल वैल्यू करीब 11.2 लाख करोड़ आंकी है, जिसमें रिलायंस इंडस्ट्रीज की लगभग 66.48 फीसदी हिस्सेदारी है। अलग लिस्टिंग से यह डिस्काउंट घटेगा और रिलायंस के शेयरों की री-रेटिंग होगी। बुलिश टारगेट प्राइसरू मोतीलाल ओसवाल ने रिलायंस पर अपनी बाय रेटिंग बरकरार रखते हुए 1,530 का टारगेट प्राइस दिया है, जो मौजूदा स्तरों से लगभग 30 फीसदी की बढ़त की संभावना को दर्शाता है। जियो प्लेटफॉर्मस का 30,200 करोड़ का मेगा आईपीओ रिलायंस इंडस्ट्रीज के कॉरपोरेट इतिहास का एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होने जा रहा है। 52-सप्ताह के निचले स्तर पर होने के बावजूद, बाजार जानकारों का मानना है कि 28 अक्तूबर को संभावित लिस्टिंग के साथ ही रिलायंस के शेयरों में छिपी वैल्यू खुलकर सामने आएगी। अल्पकालिक मंदी के बाद मध्यम से लंबी अवधि के निवेशकों के लिए यह स्थिति आकर्षक वैल्यूएशन और मजबूत री-रेटिंग का रास्ता खोल सकती है।

खेल

रणजी ट्रॉफी: दुष्कर्म के आरोपी इस विकेटकीपर बल्लेबाज की क्रिकेट में शानदार वापसी, दिल्ली के खिलाफ जड़ा शतक

कानूनी विवादों और जेल की सलाखों से बाहर आने के तुरंत बाद बंगाल के विकेटकीपर—बल्लेबाज अभिषेक पोरेल ने क्रिकेट में धमाकेदार वापसी की है। शादी का झांसा देकर दुष्कर्म (रेप) के गंभीर आरोपों में 36 दिन जेल में बिताने और पिछले महीने ही जमानत पर रिहा होने वाले पोरेल को बंगाल क्रिकेट संघ (इड) ने रणजी ट्रॉफी के पहले ही मैच में मौका दिया। कल्याणी में दिल्ली के खिलाफ खेले जा रहे इस सीजन के पहले मुकाबले में पोरेल ने न सिर्फ विकेट के पीछे शानदार मुस्तैदी दिखाई, बल्कि दबाव के क्षणों में बेहतरीन बल्लेबाजी करते हुए एक शानदार शतक जड़ दिया। उन्होंने बंगाल की टीम को भी दिल्ली के खिलाफ बेहद मजबूत स्थिति में खड़ा कर दिया है। बंगाल के कप्तान अभिमन्यू ईश्वरन ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया था। दिल्ली की पहली पारी 240 रन पर समाप्त हो गई थी। आयुष

दोसेजा ने 45 रन और सार्थक रंजन ने 33 रन की पारी खेली। इसके अलावा ऋतिक शौकीन ने 56 रन बनाए थे। पोरेल ने विकेट के पीछे तीन कैच लपकें थे। शमी ने चार विकेट और आमिर गनी ने तीन विकेट लिए थे। आकाश दीप को दो विकेट मिले थे। मुकेश कुमार ने एक विकेट लिया। जवाब में बंगाल ने अपनी पहली पारी में तीन विकेट पर 290 से ज्यादा रन बना लिए हैं। खबर लिखे जाने तक अभिषेक पोरेल 110 रन और सुदीप कुमार घरामी 110 रन बनाकर बल्लेबाजी कर रहे हैं। दोनों के बीच 190 से ज्यादा रन की साझेदारी भी हो चुकी है। कप्तान ईश्वरन 34 रन, अंकुर पॉल 17 रन और सुदीप चटर्जी दो रन बनाकर आउट हुए। क्रिकेटर अभिषेक पोरेल पर एक मेडिकल छात्रा की शिकायत के बाद शादी का झांसा देकर बलात्कार (रेप), जबरन बंधक बनाने, मारपीट करने, ब्लैकमेलिंग और आपराधिक ६1मकी देने जैसे गंभीर आरोप लगे थे। पीड़िता का आरोप था कि पोरेल ने शादी का वादा



करके लंबे समय तक उसका शारीरिक और मानसिक शोषण किया, लेकिन बाद में वादे से मुकर गए और शिकायत करने पर धमकी दी। इन गंभीर आरोपों के सामने आने के बाद कलकत्ता उच्च न्यायालय ने पुलिस को कार्रवाई करने के निर्देश दिए थे, जिसके बाद हुगली ग्रामीण पुलिस ने 11 अगस्त 2026 को

पोरेल को उनके घर से गिरफ्तार कर लिया था। गिरफ्तारी के बाद उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया था, जहां उन्होंने लगभग 36 दिन जेल में बिताए। इसके बाद, चिनसुराह जिला अदालत ने मामले की सुनवाई करते हुए 16 सितंबर 2026 को उन्हें शर्तों के साथ जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया।

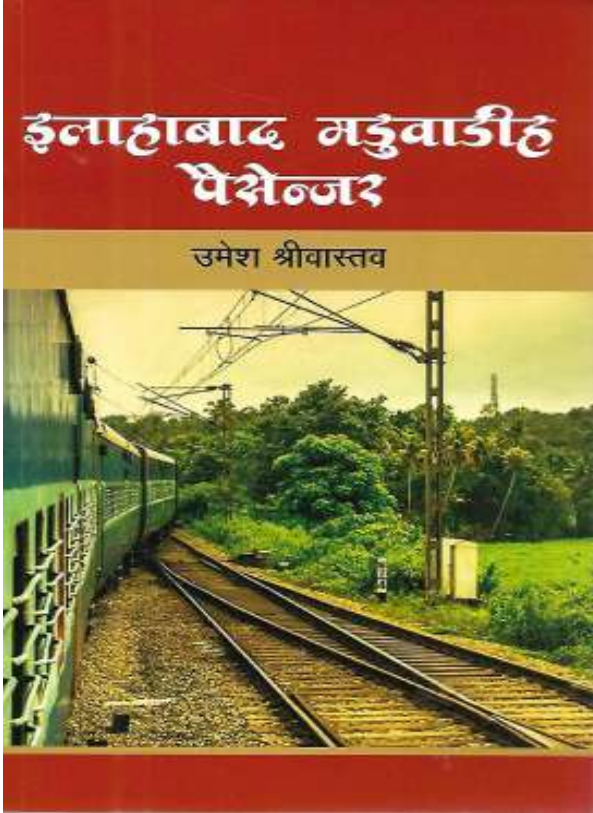
जेल से बाहर आने के बाद पश्चिम बंगाल क्रिकेट बोर्ड ने उन्हें बड़ी राहत दी और आगामी घरेलू सत्र के लिए बंगाल की रणजी ट्रॉफी टीम में शामिल कर लिया। वर्तमान में यह कानूनी मामला अदालत के अधीन है, और पोरेल को जांच में सहयोग करने और बिना अनुमति राज्य से बाहर न जाने

जैसी शर्तों पर रिहाई मिली है। जमानत पर रिहा होने के तुरंत बाद अभिषेक पोरेल को कल्याणी के बंगाल क्रिकेट अकादमी ग्राउंड पर दिल्ली के खिलाफ खेले जा रहे सीजन के पहले रणजी ट्रॉफी मैच के लिए 16 सदस्यीय मुख्य टीम में विकेटकीपर—बल्लेबाज के तौर पर चुना गया है।

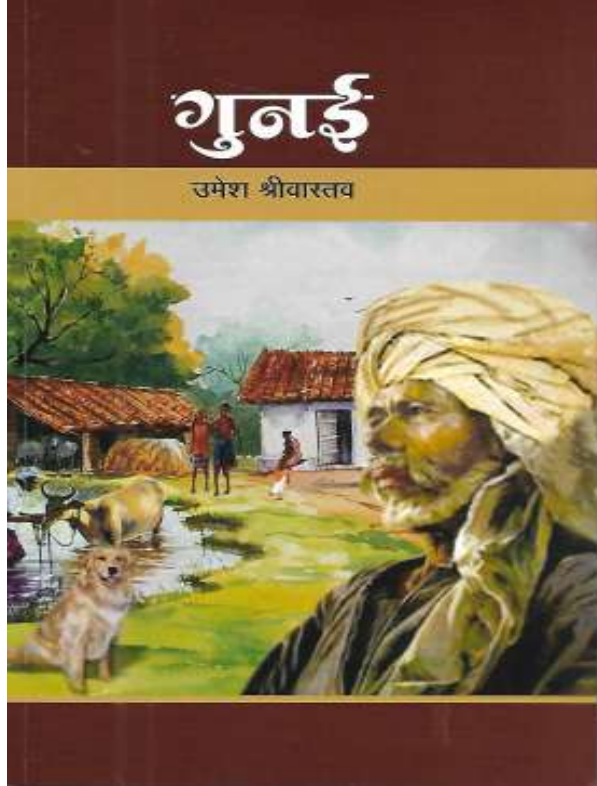
सबसे तेज 2000 रन पूरे किए, अर्शदीप ने किस मामले में साउदी और बुमराह को पछाड़ा ?

इंदौर,एजेंसी। भारत ने वेस्टइंडीज को तीसरे टी20 में हराकर पांच मैचों की सीरीज में 2–1 की बढ़त बना ली है। इस मैच में कुछ ऐसे व्यक्तिगत रिकॉर्ड्स बने, जिसने फैंस का ध्यान खींचा है। दरअसल, तीसरे टी20 में दो भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन शानदार रहा। बल्लेबाजी में अभिषेक शर्मा की तूफानी पारी देखने को मिली, वहीं गेंदबाजी में अर्शदीप सिंह ने अपना कमाल दिखाया। इन दोनों ने खास उपलब्धियां भी हासिल कीं। तीसरे टी20 में अभिषेक ने 30 गेंद में छह चौके और पांच छक्कों की मदद से 69 रन बनाए। इसी के साथ उन्होंने टी20 अंतरराष्ट्रीय में 2000 रन भी पूरे कर लिए। वह गेंद के हिसाब से टी20 अंतरराष्ट्रीय में सबसे तेज 2000 रन पूरे करने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। इस मामले में उन्होंने सूर्यकुमार यादव और एरॉन

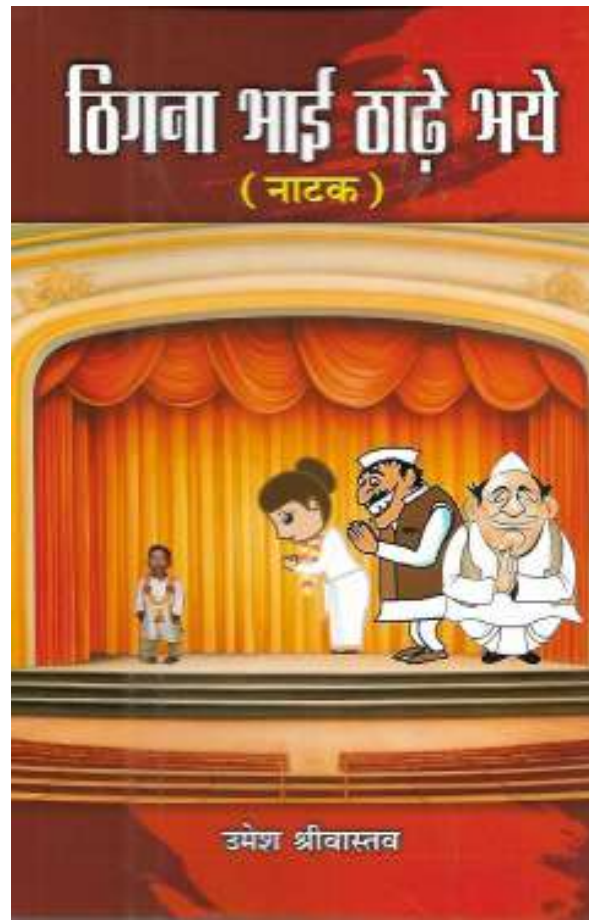
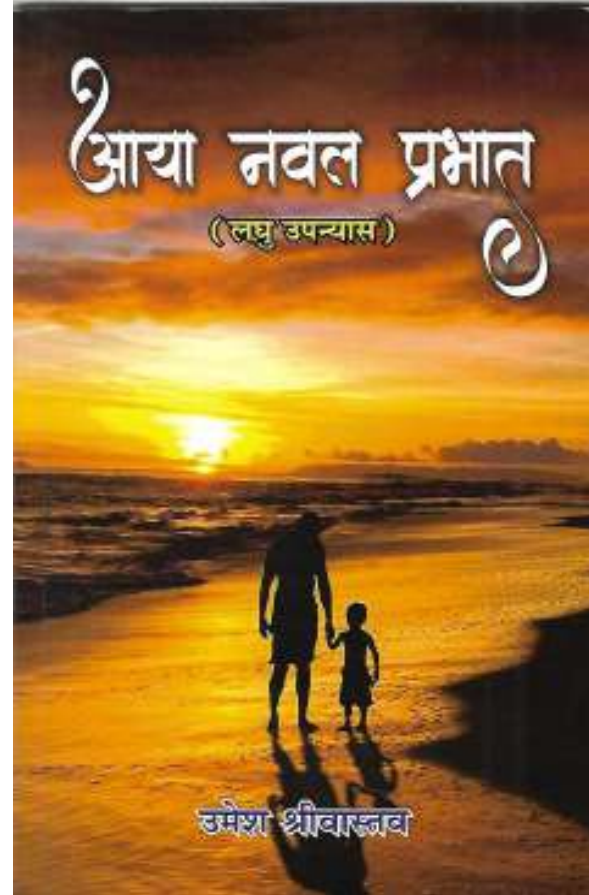
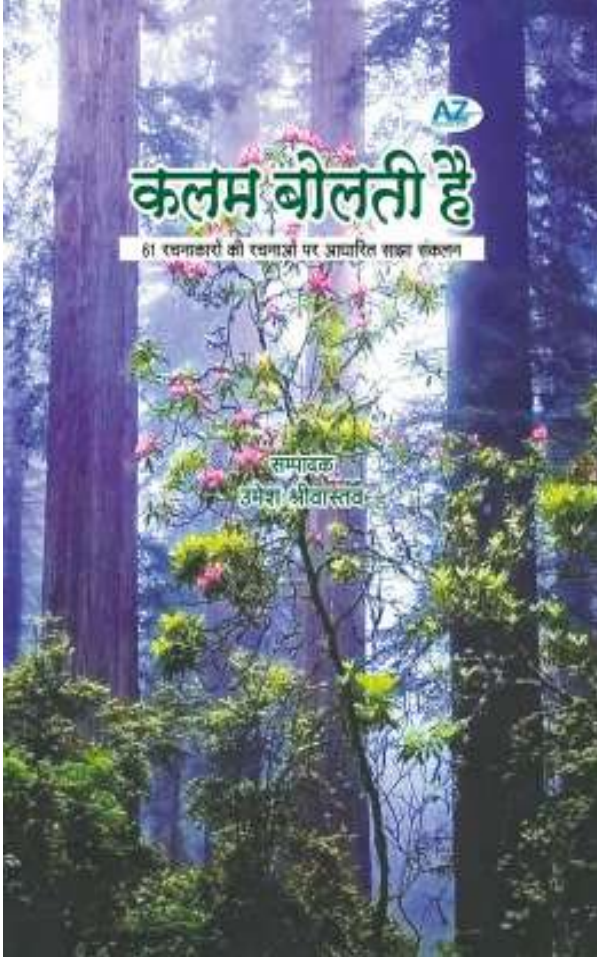
फिंच को पीछे छोड़ा। अभिषेक ने 2000 टी20 अंतरराष्ट्रीय रनों के लिए 1024 गेंदें खेलीं। वहीं, सूर्या ने 2000 टी20 अंतरराष्ट्रीय रन 1164 गेंदों में पूरे किए थे। फिंच ने इसके लिए 1283 गेंदें खेलीं थीं। अभिषेक 2000 रन पूरे करने वाले भारत के छठे बल्लेबाज बने। उनसे पहले ऐसा रोहित शर्मा, विराट कोहली, सूर्यकुमार यादव, हार्दिक पांड्या और केएल राहुल कर चुके हैं। वहीं, अर्शदीप ने भी खास रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने इस मैच में चार ओवर में 44 रन देकर तीन विकेट झटके। उनकी बदौलत भारत ने 224 रन के लक्ष्य को डिफेंड किया। वेस्टइंडीज की टीम 20 ओवर में सात विकेट पर 209 रन ही बना सकी। इसी के साथ वह टी20 अंतरराष्ट्रीय में लक्ष्य का बचाव करते हुए सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले तेज गेंदबाज बन गए हैं।



समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पेशेन्जर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।



चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित



ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

ईरान की सात शर्तों में से कुछ मानने को तैयार यूएस, तेहरान ने क्या कहा?

तेहरान,एजेंसी। ईरान की सुप्रीम नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल के सेक्रेटरी मोहसिन रेजाई ने सोमवार को होर्मुज को लेकर बड़ा दावा किया। ईरान का कहना है कि अमेरिका होर्मुज जलडमरूमध्य को फिर से खोलने के लिए ईरान की सात शर्तों में से कुछ को मानने के लिए तैयार हो गया है, लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि वॉशिंगटन का जवाब न मोहसिन रेजाई ने एक्स पर पोस्ट किया, अमेरिका ईरान की सात शर्तों में से कुछ को मानने के लिए तैयार हो गया है, लेकिन हम उसके जवाब को नाकाफी मानते हैं। ईरानी कूटनीति बदल गई है और अब पुरानी स्थिति में वापसी नहीं होगी। इस महीने की शुरुआत में, ईरान की संसद के स्पीकर मोहम्मद बाघेरी गालिबाफ ने कहा कि रणनीतिक रूप से अहम इस्ट्रेट ऑफ होर्मुजश् तब तक बंद रहेगा, जब तक अमेरिका जून में हुए 14—सूत्रीय समझौते के आधार पर तय सात शर्तों को पूरा नहीं करता। गालिबाफ ने कहा कि अमेरिका ने हाल ही में एक मध् यस्थ के जरिए कुछ प्रस्ताव रखे थे, लेकिन ईरान का रुख साफ बना हुआ है। अल जजीरा के अनुसार, ईरान ने प्रस्ताव दिया है कि अगर वॉशिंगटन शर्तें पूरी करता है (जिसमें अमेरिकी नौसैनिक नाकेबंदी और ईरानी तेल की बिक्री पर लगी पाबंदियों को हटाना शामिल है) तो स्ट्रेट ऑफ होर्मुज को फिर से खोला जा सकता है और बातचीत दोबारा शुरू की जा सकती है। पिछले महीने, ईरान ने कतरी मध्यस्थों के जरिए अमेरिका को बातचीत शुरू करने के लिए सात शर्तें बताई थीं, ताकि चल रहे टकराव को खत्म किया जा सके। इस बीच, शनिवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि तेहरान 3 नवंबर को होने वाले मध्यावधि चुनावों से पहले वाशिंगटन के खिलाफ अपनी गतिविधियां बढ़ा सकता है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी प्रशासन का मानना ​​है कि ईरान को लगता है कि ऐसे कदमों से अमेरिका को नुकसान पहुंचेगा। रिपब्लिकन पार्टी के पारंपरिक गढ़ टेनेसी में एक राजनीतिक कार्यक्रम में बोलते हुए, ट्रंप ने कहा कि वाशिंगटन में चल रहे युद्ध को तेजी से खत्म करने की क्षमता है। ट्रंप ने कहा, श्वे शायद चुनाव से पहले कुछ ज्यादा करेंगे, यह सोचकर कि इससे हमें नुकसान होगा। उन्होंने आगे कहा, कि लेकिन हम इसे बहुत जल्द खत्म कर सकते हैं।

बेटे और अफेयर पर खामोशी के लिए 336 करोड़ किए ऑफर?

वाशिंगटन,एजेंसी। अमेरिका की जानी-मानी दक्षिणपंथी सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर और लेखिका एशले सेंट क्लेयर ने अमेरिकी अरबपति व टेस्ला प्रमुख एलन मस्क के साथ खुद के संबंधों पर बेहद चौकाने वाला खुलासा किया है। एशले ने कहा है कि उन्हें मस्क ने अपने रिश्ते और बच्चे पर खामोश रहने के लिए लगभग 336 करोड़ रुपये का ऑफर दिया था, जिसे उन्होंने तुरंत ठुकरा दिया था। एशले ने कहा कि वह नहीं चाहती थीं कि उनका बेटा पूरी जिंदगी एक गंदा रहस्य बनकर जिए।

एशले ने दावा किया कि उनके बेटे रॉमुलस के जन्म के बाद मस्क की तरफ से उन्हें यह सीक्रेट डील ऑफर की गई थी। इसके तहत उन्हें तुरंत करीब 126 करोड़ रुपये नकद और अगले 21 वर्षों तक हर महीने 84 लाख रुपये दिए जाने थे। एशले ने ऑस्कर विजेता फिल्म निर्माता एलेक्स गिबनी की डॉक्यूमेंट्री प्सक और द न्यूयॉर्क टाइम्स को दिए इंटरव्यू में मस्क के साथ अपने संबंधों पर खुलकर बात की है।

ओमान में टैंकर पर ड्रोन से हमला, दो भारतीय लापता, होर्मुज में कैसे हालात, सरकार क्या बोली?

पश्चिम एशिया में तनाव और गहराने के आसार हैं। ओमान में टैंकर पर ड्रोन से हमले के बाद दो भारतीय लापता हैं। होर्मुज क्षेत्र में एक अन्य जहाज को भी निशाना बनाया गया है। हालिया हमलों के बीच भारत ने संघर्ष में शामिल सभी पक्षों से तनाव घटाने की अपील की है। सऊदी के रियाद एयरपोर्ट पर हूती लड़ाकों के हमले में घायल भारतीय अस्पताल में भर्ती हैं। मौजूदा हालात कैसे हैं? ओमान के तट पर रविवार को एक वाणिज्यिक जहाज पर ड्रोन हमले के बाद दो भारतीय नाविक लापता हैं।

ओमान के मस्कट में भारतीय दूतावास ने यह जानकारी दी। मस्कट में भारतीय दूतावास ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर लिखा, दूतावास एमटी पेट्रो डॉलिफिन, जो निकारागुआ के झंडे वाला एक टैंकर है, से संबंधित स्थिति पर बारीकी से नजर रख रहा है। जहाज पर सवार 11 भारतीय नाविकों में से दो के लापता होने की खबर है। दूतावास संबंधित अधिकारियों के साथ लगातार और निकट संपर्क में है। केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने एक्स पर लिखा, 11 भारतीय नाविकों को ले जा रहा टैंकर एमटी पेट्रो डॉलिफिन सोहार एंकरेज में 11 अक्तूबर को ड्रोन हमले का शिकार हुआ। चालक दल में शामिल नौ भारतीय सदस्यों को सफलतापूर्वक बचा लिया गया है, वे सुरक्षित हैं। दो भारतीय नागरिक लापता हैं।

बूढ़ी गंडकी में बह गए 45 मकान और छह पुल, 10 लापता

काठमांडो,एजेंसी। नेपाल में बाढ़ और भूस्खलन ने फिर से भारी तबाही मचाई है। गोरखा जिले में रविवार तड़के करीब 4रु30 बजे आई बाढ़ में 45 मकान और छह पुल बूढ़ी गंडकी नदी में समा गए। जलविद्युत परियोजनाओं को भी नुकसान पहुंचा है। सैलाब में 10 लापता हैं। सेना ने 9 विदेशी समेत 82 लोगों को सुरक्षित जगह पहुंचाया है। अधिकारियों ने नदी किनारे रहने वालों को ऊंचाई वाले स्थानों पर जाने को कहा है। अचानक आए सैलाब से बिहार में भी बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। ताजा आपदा ने भोटेकोशी और त्रिशूली नदी की विनाशकारी बाढ़ की याद ताजा कर दी है।

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़

बाढ़